INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

उ.प्र. उप निरीक्षक

UPSI/PLATOON COMMANDER /PAC

उत्तर प्रदेश पुलिस भर्ती एवं प्रोन्नत बोर्ड

भाग – 3

इतिहास + कला एवं संस्कृति + अर्थशास्त्र

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**उ. प्र. पुलिस SI (उप निरीक्षक)**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को* उत्तर प्रदेश पुलिस भर्ती एवं प्रोन्नति बोर्ड *द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**उ. प्र. पुलिस SI (उप निरीक्षक)/ Platoon Commander/PAC**" भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें* **/**

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/001xtz

Online Order करें - https://shorturl.at/sxD46

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम

क्र. सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
	प्राचीन भारत का इतिहास	
1.	भारत के संस्कृति	1-6
2.	वैदिक काल	7-13
3.	प्राचीन एवं मध्यकालीन भारत के धार्मिक आंदोलन और धर्म दर्शन	14-26
4	भारत के प्रमुख राजवंशों तथा उनके महत्त्वपूर्ण शासकों की उपलब्धियाँ	26-53
5.	प्राचीन भारत में भाषा एवं साहित्य का विकास	54-67
	मध्यकालीन भारत	
1.	अरब आक्रमण	68-70
2.	सल्तनत काल	70-84
3.	मुगलकाल	85-89
4.	मध्यकाल में कला एवं वास्तु	89-96
5.	भक्ति तथा सूफी आंदोलन	96-101
	आधुनिक भारत का इतिहास	
1.	आधुनिक भारत का विकास	101-121
2.	राष्ट्रवाद का उदय	121-144
3.	स्वतंत्रता संघर्ष एवं भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन	144-194
4.	राष्ट्र निर्माण और पुनर्गठन	194-208

	अर्थशास्त्र	
1.	अर्थशास्त्र की मूलभूत अवधारणाएं	209-212
2.	बजट एवं बजट निर्माण	212-222
3.	बैंकिंग	222-243
4.	वस्तु एवं सेवा कर	243-247
5.	राष्ट्रीय आय	247-254
6.	राजकोषीय एवं मौद्रिक नीतियाँ	254-257
7.	औद्योगिक क्षेत्र एवं वित्त	257-267
8.	प्रमुख उद्योग	268-274
9.	अवसंरचना एवं आर्थिक वृद्धि	275-276
10.	भारतीय अर्थव्यवस्था के प्रमुख क्षेत्र	276-277
11.	आर्थिक समस्याएं एवं सरकार की पहलें	278-284
12.	गरीबी एवं बेरोजगारी	284-293
13.	अंतर्राष्ट्रीय संगठन	293-303

अध्याय – 3

प्राचीन एवं मध्य कालीन भारत के धार्मिक आंदोलन और धर्म दर्शन

नये धार्मिक विचार-

आजीवक सम्प्रदाय

- आजीवक या आजीविक सम्प्रदाय दुनिया की प्राचीन दर्शन परम्परा में भारतीय जमीन पर विकसित प्रथम नास्तिकवादी या भौतिक वादी सम्प्रदाय था।
- इसकी स्थापना मक्खलिपुत्र गोंशाल द्वारा की गयी थी।
- ऐसा माना जाता है कि मक्खलिपुत्र गोंशाल पहले महावीर के शिष्य थे, किन्तु बाद में मतभेद हो जाने पर उन्होंने महावीर का साथ छोड़ दिया तथा आजीवक नामक स्वतंत्र सम्प्रदाय की स्थापना की।
- आजीवक सम्प्रदाय लगभग 1002 ई. तक बना रहा।
- इनका मत नियतिवाद या भाग्यवाद पर आधारित था। जिसके अनुसार संसार की प्रत्येक वस्तु भाग्य द्वारा पूर्व नियंत्रित एवं संचालित होती है।
- इनके अनुसार मनुष्य के जीवन पर उसके कर्मों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
- महावीर के समान गोंशाल भि ईश्वर की सत्ता में विश्वास नहीं करते थे। तथा जीव और पदार्थ को अलग-अलग तत्व मानते थे।
- इस सम्प्रदाय के स्वयं के कोई ग्रंथ या अभिलेख वर्तमान में प्राप्त नहीं हैं।
- इस सम्प्रदाय का उल्लेख तत्कालीन धर्मग्रंथों तथा अशोक के अभिलेखों के आलावा मध्यकाल के स्त्रोतों तक में मिलता है।
- ऐसा माना जाता है कि आजीवक सम्प्रदाय के अनुयायी (आजीवक श्रमण) नग्न रहते थे तथा परिव्राजकों अर्थात् सन्यासियों की भांति घूमते थे। ईश्वर पुनर्जन्म और कर्म अर्थात् कर्मकाण्ड में इनका विश्वास नहीं था।
- ये जाति व्यवस्था के घोर विरोधी थे और समानता पर जोर देते थे।
- आजीवक सम्प्रदाय का तत्कालीन जनमानस और राज्यसत्ता पर काफी गहरा प्रभाव था।
- अशोक और उसके पोते दशरथ नए बिहार के जहानाबाद (पुराना "गया", जिला) स्थित बराबर की पहाड़ियों में सात गुफाओं का निर्माण कर उन्हें आजीवकों को समर्पित किया था।

जैन व बौद्ध धर्म

उदय के कारण→

- छठी शताब्दी ई.पू. में वैदिक संस्कृति कर्मकाण्डों व आडम्बरों से ग्रसित हो गई।
- परिणाम सामाजिक कुरीतियां
- समाज में ऊँच-नीच जात-पात का भेदभाव बढ़ने लगा।
- जनता में असंतोष बढ़ा।
- **मध्य गंगा घाटी में** इसी समय 62 सम्प्रदायों का उदय हुआ। उनमें **जैन और बौद्ध** सम्प्रदाय प्रमुख थे।

बौद्ध धर्म

- बौद्ध धर्म के **संस्थापक गौतम बुद्ध थे**।

  सिद्धार्थ-बचपन का नाम - सिद्धि प्राप्त करने के लिए जन्म लेने वाला।
- जन्म 563 ई.पू. - लुम्बिनी (नेपाल)
- कुल- शाक्य (क्षत्रिय कुल)
- बुद्ध की माता – महामाया
- बुद्ध की माता की मृत्यु के बाद पालन पोषण महाप्रजापति गौतमी ने किया था।
- पिता – शुद्धोधन
- बुद्ध का विवाह - यशोधरा से
- बुद्ध के पुत्र का नाम राहुल था।

महाभिनिष्क्रमण

- 29 वर्ष की आयु में
- सांसारिक जीवन का त्याग कर दिया था।
- अनोमा नदी के तट पर सिर मुण्डन
- काषाय वस्त्र धारण किये।
- प्रथम गुरु आलार कलाम थे।
- सांख्य दर्शन के आचार्य
- बाद में उरुवेला (बोधगया) प्रस्थान
- यहाँ पांच साधक मिले।
- इनमें कौण्डिय प्रमुख थे।

ज्ञान प्राप्ति –

- 35 वर्ष की आयु में – बोधगया में ज्ञान की प्राप्ति हुई।
- **वैशाख पूर्णिमा को पीपल के वृक्ष के नीचे**

  निरंजना नदी (पुनपुन) के तट पर ज्ञान की प्राप्ति हुई।
- इसी दिन से **गौतम बुद्ध तथागत** कहलाये तथा गौतम बुद्ध नाम भी यहीं से हुआ।

जिसने सत्य को प्राप्त कर लिया।

धर्मचक्र प्रवर्तन- सारनाथ में

- बोधगया से सारनाथ आये
- प्रथम उपदेश दिया-5 ब्राह्मण सन्यासियों को मागधी भाषा में ।
- गौतम बुद्ध का बौद्ध संघ में प्रवेश हुआ ।
- सर्वप्रथम अनुयायी –

तपस्स जाट
शुद्र कालिक

- प्रिय शिष्य- आनन्द

बौद्ध धर्म की प्रथम महिला भिक्षु - गौतमी (बुद्ध की मौसी)

अन्तिम उपदेश

- **कुशीनारा में** सुभच्छ को दिया
- हिरण्यवती नदी तट पर

महापरिनिर्वाण (मृत्यु)

- कुशीनारा में 483 ई.पू.
- 80 वर्ष की आयु में
- बुद्ध के अवशेष **8 भागों में** डाले गये जहां स्तूप बनाये गये।

वैशाख पूर्णिमा का महत्व

- वैशाख पूर्णिमा को **बुद्ध पूर्णिमा** भी कहते हैं ।
- गौतम बुद्ध का जन्म, ज्ञान प्राप्ति
- महापरिनिर्वाण - वैशाख पूर्णिमा को
- अपवाद - महाभिनिष्क्रमण
- गौतम बुद्ध में 32 महापुरुषों के लक्षण बताये गये हैं।

बुद्ध के प्रमुख वचन

- जीवन कष्टों से भरा है।
- लिप्सा तृष्णा का ही दूसरा रूप है।

बौद्ध धर्म के त्रिरत्न

- **बुद्ध, धम्म, संघ**

बुद्ध के चार आर्य सत्य

1. दुख
2. दुख समुदाय
3. दुख निरोध (निवारण)
4. प्रतिपदा

- इन्हीं का कालान्तर में विस्तार होकर ये **अष्टांगिक मार्ग कहलाये।**
- भिक्षुओं का कल्याण मित्र

अष्टांगिक मार्ग

1. सम्यक दृष्टि
2. सम्यक संकल्प
3. सम्यक वाणी
4. सम्यक कर्मान्त
5. सम्यक आजीव
6. सम्यक व्यायाम
7. सम्यक स्मृति
8. सम्यक समाधि

- समाधि मनुष्य के जीवन का परम लक्ष्य निर्वाण प्राप्ति ।
- जीवन-मरण चक्र से मुक्ति

बौद्ध धर्म

- अनीश्वरवादी
- पुनर्जन्म में विश्वास
- अनात्मवादी धर्म

बौद्ध धर्म के प्रतीक

जन्म	-	कमल व साण्ड
गृहत्याग	-	घोड़ा
ज्ञान	-	पीपल
निर्वाण	-	पदचिन्ह
मृत्यु	-	स्तूप

- बौद्ध धर्म का सर्वाधिक विस्तार कोशल राज्य में ।
- **बौद्ध धर्म के सर्वाधिक उपदेश श्रावस्ती में दिये गये।**
- बौद्ध धर्म के प्रचार केन्द्र - मगध

बौद्ध संगीतियां

1. 483 ई.पू. - संरक्षक शासनकाल में अजातशत्रु के राजगृह में रचना रची गयी ।

सुत्तपिटक (बुद्ध के उपदेश) विनयपिटक (संघ के नियम)

अध्यक्ष – महाकस्सप

2. 383 ई.पू.

संरक्षक - कालाशोक

वैशाली में - भिक्षुओं में मतभेद

अध्यक्ष – सर्वकामिनी

3. 250 / 251 ई.पू.

संरक्षक शासनकाल में - अशोक

पाटलिपुत्र में रचना रची गयी

अभिधम्मपिटक

(बुद्ध के दार्शनिक विचार)

अध्यक्ष – मोग्गलिपुत्त तिस्स

4. प्रथम शताब्दी संरक्षक - कनिष्क

कुण्डलवन में (कश्मीर) — हीनयान व महायान (सम्प्रदाय में बंटा)

अध्यक्ष – वसुमित्र

- विहार - बौद्ध भिक्षुओं का निवास स्थान
- चैत्य - पूजास्थल

बौद्ध धर्म को अपनाने वाले प्रमुख शासक

- बिम्बिसार - बुद्ध का मित्र
- प्रसेनजीत
- उदायिन
- अशोक – महेन्द्र (पुत्र), संघमित्रा(पुत्री)
- बौद्ध धर्म का प्रचार करने श्रीलंका गये।

नालन्दा विश्वविद्यालय

- **गुप्त शासक कुमारगुप्त ने बौद्ध धर्म की शिक्षा के लिए स्थापित किया।**
- बौद्ध धर्म का अध्ययन करने हेतु आये ।
- फाह्यान, ह्वेनसांग (चीनी यात्री) ।
- अजातशत्रु प्रारम्भ में जैनधर्म का अनुयायी था बाद में बौद्ध धर्म का अनुयायी बना ।

बौद्ध धर्म की प्रमुख महिला अनुयायी

- गौतमी
- नंदा
- मल्लिका
- खेमा
- विशाखा
- यशोधरा
- आम्रपाली
- सुप्रवासा

बौद्ध धर्म के प्रतीक महात्मा बुद्ध के प्रमुख आठ स्थान

- लुम्बिनी
- बोधगया
- सारनाथ
- कुशीनगर
- वैशाली
- राजगृह
- श्रावस्ती
- संकाश्य
- बौद्ध धर्म के महायान सम्प्रदाय का आदर्श बोधिसत्व है। बोधिसत्व दूसरे के कल्याण को प्राथमिकता देते हुए अपने निर्वाण में विलंभ करते है।
- हीनयान का आदर्श अर्हत पद को प्राप्त करना है । जो व्यक्ति अपनी साधना से निर्वाण की प्राप्ति करते है उन्हें ही अर्हत कहा जाता है।
- बौद्ध धर्म के बारे में हमें विशद ज्ञान त्रिपिटक (विनयपिटक, सुत्रपिटक, अभिधम्भपिटक से प्राप्त होता है । इन तीनों पिटकों की भाषा पाली है।
- पालि पिटक सबसे पुराना है।
- बुद्ध के जन्म एवं मृत्यु की तिथि को चीनी परम्परा के कैंटोन अभिलेख के आधार पर निश्चित किया गया है।
- पालि त्रिपिटकों को पहली शताब्दी ईसा पूर्व में श्रीलंका के शासक वत्तगामिनी की देख-रेख में पहली बार लिपिबद्ध किया गया।
- सूत्रपिटक के पांच निकाय हैं -दीर्घ, मज्झिम, संयुक्त, अगुंत्तर, खुद्दक,।
- बुद्ध के पूर्व जन्मों से जुड़ी जातक कथाएँ खुद्दक निकाय की 15 पुस्तकों में से एक है। खुद्दक निकाय में धम्मपद (नैतिक उपदेशों का पधात्मक संकलन थेरगाथा (बौद्ध भिक्षुओं का गीत) और थेरीगाथा (बौद्ध भिक्षुणियों के गीत)है।
- बौद्धधर्म मूलतः अनीश्वरवादी है । इसमें आत्मा की परिकल्पना भी नहीं है।
- तृष्णा के क्षीण हो जाने की अवस्था को ही बुद्ध ने निर्वाण कहा है।
- विश्व दुखों से भरा है का सिद्धांत बुद्ध ने उपनिषद से लिया ।
- उपासकः गृहस्थ जीवन व्यतीत करते हुए बौद्ध धर्म को अपनाने वालों को उपासक कहा गया है।
- बौद्धसंघ में सम्मिलित होने के लिए न्यूनतम आयु सीमा 15 वर्ष थी। बौद्ध संघ में प्रविष्ट होने वाले को उपसम्पदा कहा जाता था।
- सर्वाधिक बुद्ध मूर्तियों का निर्माण गंधार शैली के अंतर्गत किया गया लेकिन बुद्ध की प्रथम मूर्ति संभवतः मथुरा कला के अंतर्गत बनी थी।
- भारत में उपासना की जाने वाली प्रथम मूर्ति संभवतः बुद्ध की थी।

भारत के महत्त्वपूर्ण बौद्ध मठ

मठ	स्थान	राज्य केन्द्र शासित प्रदेश
टाबो मठ/ ताबो मठ	तबो गाँव लाहौल (स्पीति घाटी)	हिमाचल प्रदेश
नामग्याल मठ	धर्मशाला	हिमाचल प्रदेश
हेमिस मठ	लद्दाख	जम्मू कश्मीर
थिकसे मठ	लद्दाख	जम्मू कश्मीर
शासुर मठ	लाहुल स्पीति	हिमाचल प्रदेश
माइंड्रोलिंग मठ	देहरादून	उत्तराखंड
रुमटेक मठ	गंगटोक	सिक्किम
तवांग मठ	अरुणाचल प्रदेश	अरुणाचल प्रदेश
नामड्रालिंग मठ	मैसूर	कर्नाटक
बोधिमंडा मठ	बोधगया	बिहार

बौद्ध संगीति

क्रम-	**समय**	**स्थान**	**अध्यक्ष**	**तत्कालीन शासक**	**कार्य/निर्णय/विशेषता**
प्रथम संगीति	483 ई.पू.	सप्तपर्णि गुफा	महाकस्सप	अजातशत्रु (हर्यक वंश)	बुद्ध के उपदेशों का सुत्तपिटक तथा विनय-पिटक में अलग-अलग संकलित किया गया
		(राजगृह)			सुत्तपिटक (धार्मिक संभाषण और बुद्ध के संवादों का संकलन) तथा विनयपिटक (संघ जीवन में भिक्षुओं के नियम) त्रिपिटक (बुद्ध के उपदेशों का संकलन) के अभिन्न अंग हैं।
द्वितीय संगीति	383 ई.पू.	वैशाली	साबकमीर (सुबुकामी)/ सर्वकामिनी	कालाशोक (शिशुनाग वंश)	भिक्षुओं में मतभेद के कारण बौद्धसंघ में विभाजन-(1) स्थविर, (2) महासंघिक
तृतीय संगीति	250/251 ई.पू.	पाटलिपुत्र	मोग्गलिपुत्त तिस्स	अशोक (मौर्य वंश)	अभिधम्म पिटक (दार्शनिकसिद्धांत) का संकलन
चतुर्थ संगीति	प्रथम शताब्दी ईस्वी	कुंडलवन (कश्मीर)	वसुमित्र (अध्यक्ष) अश्वघोष (उपाध्यक्ष)	कनिष्क (कुषाण वंश)	बौद्ध धर्म का विभाजन-(1) हीनयान, (2) महायान

बौद्ध धर्म की उपादेयता और प्रभाव (Usability and impact of Buddhism)

1. आर्थिक क्षेत्र में (In Economic Realm)

- लोहे के तख्ता वाले हल से खेती, व्यापार और सिक्कों के प्रचलन से व्यापारियों और अमीरों को धन संचित करने का मौका मिला। लेकिन बौद्ध धर्म ने घोषणा की कि धन संचित नहीं करना चाहिए, क्योंकि धन दरिद्रता, घृणा क्रूरता और हिंसा का जनक है।
- इन बुराइयों को दूर करने के लिए भगवान बुद्ध ने उपदेश दिया कि किसानों को बीज और अन्य सुविधाएँ और श्रमिकों को मजदूरी मिलनी चाहिए तथा इन उपायों की अनुशंसा सांसारिक दरिद्रता को दूर करने के लिये की गई।
- संघ में कर्जदारों का प्रवेश वर्जित कर दिया गया। इससे स्पष्ट महाजनों और धनवानों को लाभ हुआ क्योंकि कर्जदार अब बिना कर्ज चुकाए संघ में शामिल नहीं हो सकते थे।
- संघ में दासों का प्रवेश निषेध था। यदि उन्हें प्रवेश मिलता तो कृषि में गिरावट होती क्योंकि ज्यादातर दास कृषि क्षेत्रों से ही जुड़े हुए थे।

2. सामाजिक क्षेत्र में (In Social Realm)

- बौद्ध धर्म ने स्त्रियों और शूद्रों के लिए अपने द्वार खोलकर समाज पर गहरा प्रभाव जमाया क्योंकि जिसने बौद्ध धर्म स्वीकार किया उन्हें अधिकारहीनता से मुक्ति मिली।
- बौद्ध धर्म ने अहिंसा और जीवमात्र के प्रति दया की भावना जगाकर देश में पशुधन में वृद्धि किया ।
- बौद्ध धर्म ने समाज में अंधविश्वास की जगह तर्क को वरीयता प्रदान की जिससे लोगों में बुद्धिवाद की परिकल्पना पनपी ।

3. राजनीतिक क्षेत्र में (In Political Realm)

- जिस शासक ने बौद्ध धर्म की स्वीकार किया, चाहे वह समकालीन हो या परवर्ती, अपनी नीति में अहिंसा को एक नीति के रूप में लागू किया, जैसे- अशोक ने बौद्ध धर्म को

गुप्त वंश

- गुप्त राजवंश प्राचीन भारत के प्रमुख राजवंशों में से एक था।
  मौर्य वंश के पतन के बाद दीर्घकाल में हर्ष तक भारत में राजनीतिक एकता स्थापित नहीं रही।
- कुषाण एवं सातवाहनों ने राजनीतिक एकता लाने का प्रयास किया। मौर्योत्तर काल के उपरान्त तीसरी शताब्दी ईस्वी में तीन राजवंशो का उदय हुआ जिसमें मध्य भारत में नाग शक्ति, दक्षिण में वाकाटक तथा पूर्वी में गुप्त वंश प्रमुख हैं। मौर्य वंश के पतन के पश्चात नष्ट हुई **राजनीतिक एकता को पुनः स्थापित करने का श्रेय गुप्त वंश को हैं।**
- गुप्त साम्राज्य की नींव तीसरी शताब्दी के चौथे दशक में तथा उत्थान चौथी शताब्दी की शुरुआत में हुआ। गुप्त वंश का प्रारम्भिक राज्य आधुनिक उत्तर प्रदेश और बिहार में था।

गुप्त वंश की उत्पत्ति

- चन्द्रगुप्त द्वितीय की पुत्री प्रभावती गुप्त ने पूना अभिलेख में अपने वंश को स्पष्टतः धारण गोत्रीय बताया हैं । अग्रवालों के 18 गोत्र में से एक गोत्र धारण हैं ।
- गुप्त वैश्यों की उपाधि हैं, आज भी धार्मिक कर्म व संकल्प करते हुए वैश्य पुरोहित नाम व गोत्र के साथ गुप्त उपनाम का उल्लेख करते हैं ।
- गुप्त शासकों के नाम श्री, चन्द्र, समुद्र, स्कन्द आदि थे । जबकि गुप्त उनका उपनाम था, जो की उनके वर्ण व जाति को उद्घोषित करता हैं ।
- गुप्त उपनाम केवल और केवल वैश्य समुदाय के व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त होता हैं । **इतिहास में व पुराणों में गुप्त सम्राटों को वैश्य बताया गया हैं ।**
- गुप्त वंश के शासक अग्रवाल थे । प्रख्यात इतिहासकार राहुल संस्कृतायन ने भी गुप्त वंश को अग्रवाल वैश्य बताया हैं ।
- अग्रवालों की कुलदेवी माता लक्ष्मी है । गुप्त सम्राटों की कुलदेवी भी माता लक्ष्मी है । अग्रवाल मुख्यतः वैष्णव होते है और शुद्ध शाकाहारी भी गुप्त वंश के शासक भी वैष्णव और शाकाहारी थे ।
- **गुप्त वंश के समय में भारत सोने की चिड़िया कहलाया था ।** एक विशुद्ध वैश्य शासक ही व्यापार को बढ़ावा दे सकता हैं।

गुप्त वंश के शासक

घटोत्कच (280-320 ई.)

- गुप्त वंश के शासक श्रीगुप्त के पश्चात् उसका पुत्र घटोत्कच राजगद्दी पर बैठा ।
- इसने 280 ई. से 320 ई. तक शासन किया। इसने महाराजा की उपाधि धारण की थी।
- उत्पन्न होते समय उसके सिर पर केश (उत्कच) न होने के कारण उसका नाम घटोत्कच रखा गया।
- वह अत्यन्त मायावी था जिस कारण वो जन्म लेते ही बड़ा हो गया था।

चन्द्रगुप्त प्रथम (319-335 ई.)

- अपने पिता घटोत्कच के बाद सन् 319 / 320 ई. में चन्द्रगुप्त प्रथम राजा बना। चन्द्रगुप्त, गुप्त वंशावली में पहला स्वतंत्र शासक था।
- इसने महाराजाधिराज की उपाधि धारण की थी । बाद में लिच्छवि राजकुमारी कुमार देवी से विवाह किया अपने साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया।
- यहीं से उसका साम्राज्य विस्तार हुआ। उसने सफलता पूर्वक लगभग पंद्रह वर्ष (320 ई. से 335 ई. तक) तक शासन किया।
- चन्द्रगुप्त ने एक गुप्त संवत (319-320 ई.) चलाया कदाचित इसी तिथि को चन्द्रगुप्त प्रथम का राज्याभिषेक हुआ था ।

समुद्रगुप्त (335 – 375 ई.)

- चन्द्रगुप्त प्रथम के बाद 335 ई. में उसका तथा कुमारदेवी का पुत्र समुद्रगुप्त राजगद्दी पर बैठा।
- सम्पूर्ण प्राचीन भारतीय इतिहास में महानतम शासकों के रूप में वह नामित किया जाता है। इन्हें **परक्रमांक** कहा गया है।
- **समुद्रगुप्त का शासनकाल राजनैतिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से गुप्त साम्राज्य के उत्कर्ष का काल माना जाता हैं।** इस साम्राज्य की **राजधानी पाटलिपुत्र** थी।
- समुद्रगुप्त ने 'महाराजाधिराज' की उपाधि धारण की।
- समुद्रगुप्त एक असाधारण सैनिक योग्यता वाला महान विजित सम्राट था। **विन्सेट स्मिथ ने इन्हें नेपोलियन की उपाधि दी।**
- उसका सबसे महत्त्वपूर्ण अभियान दक्षिण की तरफ **(दक्षिणापथ)** था । इसमें उसकी बारह विजयों का उल्लेख मिलता है।
- समुद्रगुप्त एक अच्छा राजा होने के अतिरिक्त एक अच्छा कवि तथा संगीतज्ञ भी था। उसे कला मर्मज्ञ भी माना जाता है।
- उसका देहान्त 375 ई. में हुआ जिसके बाद उसका पुत्र चन्द्रगुप्त द्वितीय राजा बना। यह उच्चकोटि का विद्वान तथा विद्या का उदार संरक्षक था।
- उसे कविराज भी कहा गया है। वह महान संगीतज्ञ था जिसे वीणा वादन का शौक था।
- इसने प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान वसुबन्धु को अपना मन्त्री नियुक्त किया था।
- हरिषेण, समुद्रगुप्त का मंत्री एवं दरबारी कवि था। हरिषेण द्वारा रचित प्रयाग प्रशस्ति से समुद्रगुप्त के राज्यारोहण, विजय, साम्राज्य विस्तार के संबंध में सटीक जानकारी प्राप्त होती है।

तुजुक-ए-बाबरी

- तुजुक-ए-बाबरी या बाबरनामा बाबर की आत्मकथा है जिसे बाबर ने तुर्की भाषा में लिखा है। मुग़ल काल के दौरान कई लेखकों ने इस किताब का फारसी में अनुवाद किया। इसके बाद इसका कई यूरोपीय भाषाओँ में भी अनुवाद हुआ। तुजुक-ए-बाबरी की प्रशंसा कई इतिहासकारों ने की है, और कुछ ने इसे भारत के वास्तविक इतिहास का एक मात्र स्रोत माना है। इस किताब में न सिर्फ बाबर के जीवन की घटनाओं के विषय में जानकारी मिलती है, बल्कि इससे उसके चरित्र, व्यक्तित्व, ज्ञान, क्षमता, कमजोरी के बारे में भी जानकारी मिलती है। यह कहा जा सकता है कि इस किताब में बाबर ने सच्चाई लिखने की पूरी कोशिश की है। बाबर ने अपने दोस्तों के साथ शराब और अफीम के अपने प्रयोग के बारे में भी लिखा है। बाबर ने निष्पक्ष होकर अपने दोस्तों और दुश्मनों के बारे में लिखा। उसने दौलत खान लोदी, इब्राहिम लोदी, आलम खान लोदी, राणा संग्राम सिंह आदि के चरित्र, व्यक्तित्व और उनके कार्यों के बारे में भी लिखा है। उसने अपने जीवन के दौरान किए गए दौरों के दौरान खूबसरत जलवायु, पहाड़ों, नदियों, जंगलों, वनस्पतियों और जीव, पेड़ और फूल, प्रकृति की सुंदरता का भी वर्णन किया।
- तुजुक-ए-बाबरी ने बाबर ने भारत के बारे भी वर्णन किया है। उसने यहाँ की भौगोलिक स्थिति, जलवायु, नदियों, राजनीतिक स्थिति, विभिन्न राज्यों और उनके शासकों के साथ-साथ लोगों के पहनावे, भोजन और रहने की हालत का वर्णन किया है। जब बाबर यहाँ के लोगों के साथ पहली बार संपर्क में आया तो वह भारतीयों और उनके रहने की स्थिति से प्रभावित नहीं था। उसने यहाँ के बारे में लिखा है, "यहां के लोग न तो सुंदर हैं और न ही सुसंस्कृत।" उसने लिखा है की यहाँ अच्छे घोड़े, कुत्ते, अंगूर, तरबूज या अन्य फल नहीं मिलते हैं, और बाज़ारों में अच्छी रोटी और पका हुआ भोजन भी नहीं मिलता है। लोग यहाँ मोमबत्ती या मशालों का उपयोग नहीं करते, इसके बजाए वे तेल के लैम्प का उपयोग करते हैं, जो उनके नौकर लेकर चलते हैं। बड़ी नदियों के बावजूद यहाँ पानी की कमी है। यहाँ के बागानों के कोई चारदीवारी नहीं है। घर अच्छी तरह से भी नहीं बने हुए हैं, और उनमें ताजा हवा के लिए कोई व्यवस्था भी नहीं है। किसानों और गरीब लोग लगभग नग्न रहते हैं। यहाँ के पुरुष लंगोट पहनते हैं और महिलाएं सिर्फ एक कपड़े से अपने शरीर को ढकी रहती हैं। हालाँकि उसने भारत की विशालता और यहाँ की समृद्धि की प्रशंसा भी की है। उसने भारत की बरसात के मौसम की सराहना की है, लेकिन यह भी लिखा कि, इस मौसम में यहाँ नमी से सब कुछ ख़राब हो जाता है। बाबर ने यहाँ हर तरह के कामगार बड़ी संख्या में उपलब्ध होने और बड़ी संख्या में उनके आगरा, सीकरी, बयाना, धौलपुर, ग्वालियर और उसके भवनों पर काम करने के बारे में भी लिखता है।
- उन्होंने वर्णन किया है कि कामगार के हर समूह, एक खास जाति के थे और हर जाति पीढ़ियों से अपने पेशे का अनुसरण करती थी। बाबर ने यहां अपने दुश्मनों के खिलाफ उसकी लड़ाई और भारत की राजनीतिक स्थिति का वर्णन किया है। उसने दिल्ली, गुजरात, बहमनी, मालवा और बंगाल के मुस्लिम शासकों और मेवाड़, विजयनगर के हिन्दू शासकों का विवरण दिया है। उसने दौलत खान लोदी, इब्राहिम लोदी और राणा संग्राम सिंह के खिलाफ अपनी लड़ाईयों, सैनिकों की संख्या और उनकी सफल रणनीति का विवरण भी दिया है।
- बाबर के लिखे विवरणों को सही नहीं माना जा सकता, परन्तु उसकी किताब तुजुक-ए-बाबरी आज भी समकालीन इतिहास का महत्त्वपूर्ण स्रोत है।

तारीख-ए-राशिदी

- इस किताब को बाबर के चचेरे भाई मिर्जा मुहम्मद हैदर दुघलात (Mirza Muhammad Haidar Dughlat) ने फारसी भाषा में लिखा था। मिर्जा हैदर ने बाबर और हुमायूँ के जीवन की घटनाओं को अपनी आँखों से देखा था। उसने, हुमायूँ के साथ शेरशाह सूरी के खिलाफ कन्नौज का युद्ध भी लड़ा था। मिर्जा हैदर ने अपनी किताब को दो भागों में लिखता है, पहले भाग में उसने 1347-1553 ई. तक मुग़ल सम्राटों का इतिहास लिखा है, और दूसरे भाग में उसने 1541 ई. तक की अपने जीवन की घटनाओं के बारे में लिखा है। दूसरे भाग से हमें ज्यादा महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ मिलती हैं।

हुमायूँ-नामा

फारसी भाषा में इस किताब को गुलबदन बेगम (Gulbadan Begum) जो बाबर की पुत्री और हुमायूँ की सौतेली बहन थी, ने लिखा है। इस किताब को उसने अकबर के शासनकाल में उसके निर्देशों पर लिखा। उसने बाबर के शासन के बाद की घटनाओं और सम्राटों के शासनकाल की घटनाओं का वर्णन किया है, लेकिन उसने सम्राटों के चरित्र, व्यक्तित्व और परिवार के संबंधों पर ज्यादा जोर दिया है। इस किताब से कोई बहुत महत्त्वपूर्ण जानकारी नहीं मिलती है।

तारीख-ए-शेर शाही या तौहफा-ए-अकबर-शाही

- फारसी भाषा में इस किताब को अब्बास खान सरवानी (Abbas Khan Sarwani) ने अकबर के निर्देशों पर लिखा है। इस किताब का केवल कुछ भाग ही उपलब्ध है। इस किताब को उसने शेरशाह की मौत के 40 वर्ष बाद लिखा, और उसने खुद को शेरशाह के परिवार से सम्बंधित बताया है। उसने हर घटना की जानकारी के स्रोत सामग्री का वर्णन किया है, सुर इस किताब की प्रामाणिकता पर संदेह नहीं किया जा सकता है। इसलिए, तारीख-ए-शेर शाही को एक प्रामाणिक स्रोत-सामग्री के रूप में माना गया है।

शाहजहाँ (1627 ई. - 1658 ई.)

- शाहजहाँ (खुर्रम) का जन्म 1592 में जहाँगीर की पत्नी जगत गोसाईं से हुआ।
- जहाँगीर की मृत्यु के समय शाहजहाँ दक्कन में था। जहाँगीर की मृत्यु के बाद नूरजहाँ ने लाहौर में अपने दामाद शहरयार को सम्राट घोषित कर दिया। जबकि आसफ़ खां ने शाहजहाँ के दक्कन से आगरा वापस आने तक अंतरिम व्यवस्था के रुप में खुसरो के पुत्र द्वार बक्श को राजगद्दी पर आसीन किया।
- शाहजहाँ ने अपने सभी भाइयो एवं सिंहासन के सभी प्रतिद्वंदियों तथा अंत में द्वार बक्श की हत्या कर 24 फरवरी 1628 में आगरा के सिंहासन पर बैठा।
- **शाहजहाँ का विवाह 1612 ई. में आसफ की पुत्री और नूरजहाँ की भतीजी' अर्जुमंद बानो बेगम' से हुआ था, जो बाद में इतिहास में मुमताज महल के नाम से विख्यात हुई।**
- शाहजहाँ ने दक्षिण भारत में सर्वप्रथम अहमदनगर पर आक्रमण करके 1633 में उसे मुग़ल साम्राज्य में मिला लिया।
- **मोहम्मद सैयद (मीर जमला), गोलकुंडा के वजीर ने, शाहजहाँ को कोहिनूर हीरा भेंट किया था।**
- **व्यापार, कला, साहित्य और स्थापत्य के क्षेत्र में चर्मोत्कर्ष के कारण ही इतिहासकारों ने शाहजहाँ के शासन काल को स्वर्ण काल की संज्ञा दी है।**
- **शाहजहाँ ने दिल्ली में लाल किला और जामा मस्जिद का निर्माण कराया और आगरा में अपनी पत्नी मुमताज महल की याद में ताजमहल बनवाया** जो कला और स्थापत्य का उत्कृष्ट नमूना प्रस्तुत करते हैं।
- पंडित जगन्नाथ शाहजहाँ के राज कवि थे जिन्होंने गंगा लहरी और रस गंगाधर की रचना की थी।
- शाहजहाँ के पुत्र दारा ने भगवत गीता और योगवासिष्ठ का फारसी में अनुवाद करवाया था। शाहजहाँ के द्वारा दारा को शाहबुलंद इकबाल की उपाधि से विभूषित किया था।
- **दारा का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य वेदों का संकलन है, उसने वेदों को ईश्वरीय कृति माना था।** दारा सूफियों की कादरी परम्परा से बहुत प्रभावित था।
- शाहजहाँ दारा को बादशाह बनाना चाहता था, किन्तु अप्रैल 1658 ई. को धरमत के युद्ध में औरंगजेब ने दारा को पराजित कर दिया।
- औरंगजेब और शुजा के बीच इलाहाबाद खंजवा के निकट जनवरी 1659 में एक युद्ध हुआ जिसमें पराजित होकर शुजा अराकान की ओर भाग गया।
- शाहजहाँ की मृत्यु के उपरांत उसके शव को ताज महल में मुमताज महल की कब्र के नजदीक दफनाया गया था।

औरंगजेब (1658 – 1707 ई.)

- औरंगजेब का जन्म 3 नवंबर 1618 को उज्जैन के निकट दोहन नामक स्थान पर हुआ था।
- उत्तराधिकार के युद्ध में विजय होने के बाद औरंगजेब 21 जुलाई 1658 को मुग़ल साम्राज्य की गद्दी पर आसीन हुआ।
- 1633 में मीर जुमला की मृत्यु के बाद औरंगजेब ने शाइस्ता खां को बंगाल का गवर्नर नियुक्त किया। शाइस्ता खां ने 1666 ई. में पुर्तगालियों को दण्ड दिया तथा बंगाल की खाड़ी में स्थित सोन द्वीप पर अधिकार कर लिया। कालांतर में उसने अराकान के राजा से चटगांव जीत लिया।
- **औरंगजेब शाहजहाँ के काल में 1636 ई. से 1644 ई. तक दक्षिण के सूबेदार के रुप में रहा और औरंगाबाद मुगलों की दक्षिण सूबे की राजधानी थी।**
- शासक बनने के बाद औरंगजेब के दक्षिण में लड़े गए युद्धों को दो भागों में बाँटा जा सकता है - **बीजापुर तथा गोलकुंडा के विरुद्ध युद्ध और मराठों के साथ युद्ध।**
- औरंगजेब ने 1665 ई. में राजा जयसिंह को बीजापुर एवं शिवाजी का दमन करने के लिए भेजा। **जयसिंह शिवाजी को पराजित कर पुरंदर की संधि (जून, 1665) करने के लिए विवश किया।** किन्तु जयसिंह को बीजापुर के विरुद्ध सफलता नहीं मिली।
- **पुरंदर की संधि के अनुसार शिवाजी को अपने 23 किले मुगलों को सौंपने पड़े तथा बीजापुर के खिलाफ मुगलों की सहायता करने का वचन देना पड़ा।**
- 1687 ई. में औरंगजेब ने गोलकुंडा पर आक्रमण कर के 8 महीने तक घेरा डाले रखा, इसके बावजूद सफलता नहीं मिली। अंततः अक्टूबर **1687 में गोलकुंडा को मुग़ल साम्राज्य में मिला लिया गया।**
- शिवाजी की मृत्यु के बाद उनके पुत्र संभाजी ने मुगलों से संघर्ष जारी रखा किन्तु 1689 ई. में उसको पकड़कर उसकी हत्या कर दी गई।
- **संभाजी की मृत्यु के बाद सौतेले भाई राजाराम ने भी मुगलों से संघर्ष जारी रखा, जिसे मराठा इतिहास में स्वतंत्रता संग्राम के नाम से जाना जाता है।**
- **मारवाड़ और मुगलों के बीच हुए इस तीस वर्षीय युद्ध (1679 – 1709 ई.) का नायक दुर्गादास था, जिसे कर्नल टॉड ने यूलिसिस' कहा है।**
- **औरंगजेब ने सिक्खों के नवें गुरु तेग बहादुर की हत्या करवा दी।**
- **औरंगजेब एक कट्टर सुन्नी मुसलमान था। उसका प्रमुख लक्ष्य भारत में दार-उल-हर्ब के स्थान पर दार-उल इस्लाम की स्थापना करना था।**
- औरंगजेब ने 1663 ई. में सती प्रथा पर प्रतिबंध लगाया प्रथा हिंदुओं पर तीर्थ यात्रा कर लगाया।

(iii) अकबरी महल
(iv) लाहौर का किला,
(v) इलाहाबाद का किला,
(vi) दीवान-ए-आम
(vii) जोधाबाई का किला,
(viii) बीरबल का महल
(ix) पंचमहल, यह भी सीकरी में है और हिन्दू-मुस्लिम स्थापत्य का मिश्रण
(x) **जामा मस्जिद,** इसका निर्माण 1571 ई. में हुआ। **यह चित्रकारी की दृष्टि से फतेहपुरी सीकरी की सर्वश्रेष्ठ इमारत है।**
(xi) बुलन्द दरवाजा, इसे अकबर ने गुजरात की विजय के बाद बनवाया था। यह फतेहपुर सीकरी में स्थित है और मुग़ल कालीन दरवाजों में श्रेष्ठ है।
(xii) **शेख सलीम चिश्ती का मकबरा,** यह 1571 ई. में बना था। इसकी चित्रकारी देखने योग्य है।
(xiii) सिकन्दरा, इसका निर्माण कार्य अकबर ने प्रारम्भ करवाया था, परन्तु यह 1623 ई. में जहाँगीर के शासनकाल में बनकर तैयार हुआ।

अकबर द्वारा बनवाए गए भवनों की इतिहासकारों ने बड़ी प्रशंसा की है । स्मिथ ने फतेहपुर सीकरी की इमारतों को अभूतपूर्व व पत्थर पर अंकित कहानी कहा है।

(5) <u>जहाँगीर की स्थापत्य कला</u> -

जहाँगीर को चित्रकला से ही अधिक लगाव था, वास्तुकला से नहीं । उसके समय की दो इमारतें प्रमुख हैं ।

(i) <u>एत्मादुद्दौला का मकबरा</u> - यह मकबरा नूरजहाँ ने अपने पिता की याद में 1626 ई. में बनवाया था। यह आगरा में स्थित है और सफेद संगमरमर का बना है।

(ii) <u>जहाँगीर का मकबरा</u> - इसका निर्माण भी नूरजहाँ द्वारा करवाया गया था। यह लाहौर के निकट रावी नदी के किनारे शाहदरा में स्थित है। समाधि पर संगमरमर की पच्चीकारी की गई है।

(6) <u>शाहजहाँ की स्थापत्य कला</u> - भवन निर्माण की दृष्टि से शाहजहाँ का काल मुग़ल काल का स्वर्ण युग था। उसके द्वारा बनवाई गई इमारतों में मौलिकता, सुन्दरता और कोमलता है। इन भवनों में नक्काशी व चित्रकारी विशेष है। शाहजहाँ के काल में निम्नलिखित इमारतों का निर्माण हुआ।

(i) <u>आगरा के किले में निर्मित इमारतें</u> - शाहजहाँ ने अकबर द्वारा लाल किले में लाल पत्थर से बनवाई गई इमारतों को तुड़वाकर उन्हें संगमरमर से बनवाया। ये इमारतें हैं– दीवान-ए-आम, दीवान-ए-खास, मच्छी भवन, शीश महल तथा खास महल, झरोखा दर्शन और मुसम्मन बुर्ज, नगीना और मोती मस्जिद।

(ii) <u>ताजमहल</u> -

- **शाहजहाँ द्वारा बनवाई गई सर्वश्रेष्ठ इमारत आगरा का ताजमहल है,** जिसे उसने अपनी प्रिय बेगम मुमताज महल की याद में बनवाया था। इसकी गणना **विश्व के सात आश्चर्यों (अजूबों) में की जाती है। यह 22 वर्षों में बनकर तैयार हुआ। यह इमारत फारसी ढंग से बनी हुई है, फिर भी बहुत-सी शिल्पकला हिन्दू ढंग की है।**

(iii) <u>दिल्ली का लालकिला</u> –

- शाहजहाँ ने 1632 ई. में दिल्ली में **यमुना नदी के** किनारे एक विशाल किले का निर्माण करवाया। इसमें दो दरवाजे हैं। **इसमें दीवान-ए-खास, दीवान-ए-आम और रंगमहल बहुत सुन्दर हैं।**
- दीवान-ए-खास की दीवार पर लिखा है, "अगर फिरदौस बरसरा जमीनस्त हमीनस्त, हमीनस्त, हमीनस्त" अर्थात् धरती पर यदि कहीं स्वर्ग है, तो यहीं है, यहीं है, यहीं है।

(iv) <u>दिल्ली की जामा मस्जिद</u> - शाहजहाँ ने दिल्ली में लालकिले के निकट जामा मस्जिद बनवाई। यह लाल पत्थर की बनी हुई है।

(v) <u>तख्त-ए-ताऊस (मयूर सिंहासन)</u>- शाहजहाँ ने मयूर की शक्ल का एक सिंहासन बनवाया था।

(7) <u>औरंगजेब की स्थापत्य कला</u> –

- दिल्ली की जिस एकमात्र इमारत से औरंगजेब का नाम सम्बन्धित है, वह है लालकिले में स्थित सफेद संगमरमर की मस्जिद । **औरंगजेब ने 1679 ई. में अपनी प्रिय बेगम रबिया-उद्-दौरानी का मकबरा दक्षिण में औरंगाबाद में बनवाया था। यह द्वितीय ताजमहल के नाम से प्रसिद्ध है।**
- ताज की नकल होते हुए भी यह डिजायन, कारीगरी और रचना में उससे कहीं भिन्न है। औरंगजेब द्वारा बनवाई गई लाहौर की बादशाही मस्जिद तथा बनारस एवं मथुरा की मस्जिदें भी उल्लेखनीय हैं।

<u>दक्षिण भारतीय मध्य-कालीन स्थापत्य कला</u>

- दक्षिण भारत में अलाउद्दीन खिलजी और फिर मुहम्मद बिन तुगलक की सेनाओं ने आक्रमण किया। मुहम्मद बिन तुगलक की अयोग्यताओं के कारण दक्षिण भारत स्वतंत्र हो गया और बहमनी और विजयनगर साम्राज्य की स्थापना हुई ।

<u>बहमनी साम्राज्य और दक्षिण भारतीय मुस्लिम सल्तनत</u>

- बहमनी साम्राज्य की स्थापना 1345 में हुई।
- **बहमनी साम्राज्य के समय गुलबर्गा के किले का निर्माण हुआ। इसकी मस्जिद स्थापत्य कला का बेजोड़ नमूना है।** इसके अलावा, बहमनी साम्राज्य में कई मकबरों का निर्माण हुआ।
- कालांतर में बहमनी साम्राज्य टूटकर पाँच सल्तनतों में बंट गया- अहमदनगर, बीजापुर, बरार, बीदर, गोलकुंडा ।

- खासकर अहमदशाही वंश के शासकों के निरीक्षण में विकसित इस शैली में पत्थर की कटाई का काम बड़ी कुशलता से किया जाता था।
- जहाँ पहले लकड़ी के खम्भे नक्काशी करके लगाए जाते थे, वहाँ अब पत्थर का उपयोग होने लगा।
- अहमदशाह ने अहमदाबाद की नींव रखी।

जामा मस्जिद

- 1423 ई. में इस मस्जिद का निर्माण अहमदशाह ने अहमदाबाद में करवाया।
- यह मस्जिद गुजराती वास्तुकला शैली का सर्वोत्कृष्ट नमूना है।
- यह एक ऐसे भू-भाग पर निर्मित है, जिसके चारों ओर चार खानकाह निर्मित है।
- मस्जिद के मेहराबों मिम्बर (Sanctuary) में लगभग 260 खम्भे लगे हैं।
- मस्जिद के खम्भों एवं गैलरियों पर सघन खुदाई हुई है।
- फर्ग्युसन इस मस्जिद की तुलना रामपुर के राणाकुम्भा के मंदिर से की है।
- इस मस्जिद से किले में प्रवेश के लिए चौड़े रास्ते में तीन 37 फुट ऊँचे दरवाजों का निर्माण किया गया है।
- पर्सी ब्राउन के अनुसार, "पूरे देश में नहीं तो कम-से-कम पश्चिम भारत में यह मस्जिद निर्माण कला का श्रेष्ठतम नमूना है।"

खम्भात की जामा मस्जिद

- 1325 ई. में निर्मित इस मस्जिद के पूजा गृह की तुलना दिल्ली की कुतुब मस्जिद एवं अजमेर के 'अढाई दिन के झोपड़े' से की जाती है।

भड़ौच की जामा मस्जिद

- 1300 ई. में निर्मित यह मस्जिद हिन्दू मंदिरों के अवशेष से बनाई गई थी।

टंका मस्जिद

- 1361 ई. में निर्मित यह मस्जिद का निर्माण टोलका में करवाया गया था।
- अलंकृत स्तम्भों वाली इस मस्जिद में हिन्दू शैली का स्पष्ट छाप दिखाई पड़ती है।

हिलाल खाँ काजी की मस्जिद

- 1333 ई. में ढोलका में इस मस्जिद का निर्माण करवाया गया था।
- इस मस्जिद में स्थानीय शैली में दो ऊँची मीनारों का निर्माण किया गया है।

अहमदशाह का मकबरा

- मुहम्मद शाह ने जामा मस्जिद के पूर्व में स्थित अहाते में इसका निर्माण करवाया था।
- दक्षिणी भाग में प्रवेश द्वारा वाला यह इमारत वर्गाकार है।
- मकबरे के ऊपर गुम्बद का, निर्माण किया गया है।

गुजराती स्थापत्य कला का सर्वश्रेष्ठ काल महमूदशाह बेगड़ा के समय से आरंभ होता है। उसने चम्पानेर, जूनागढ़ तथा खेड़ा नामक तीन नगरों की स्थापना की थी। उसके द्वारा निर्मित इमारतों में चम्पानेर की जामी मस्जिद, नगीना मस्जिद, मोहर इमारतें आदि प्रमुख हैं।

- **चित्रकला एवं संगीत का विकास -**

मुग़ल काल में कला, चित्रकला एवं संगीत

- भारत में चित्रकला का विकास हुमायूँ के शासन-काल में प्रारंभ हुआ। ये चित्रकार मीर सैयद अली सिराजी और ख्वाजा अब्दुल समद तबरिजी थे।
- सिराजी एवं तबरिजी का निर्णायक रूप से पड़ा भारतीय चित्रकार अधिकतर धार्मिक विषयों का चित्रण करते थे। जबकि इरानी चित्रकारों ने राजदरबारों के जीवन, युद्ध के दृश्य आदि का चित्रण किया। सल्तनत काल से ही भारत में कागज का प्रयोग लोकप्रिय होने लगा था।

अकबर के समय चित्रकला -

- मीर सैयद अली और ख्वाजा अब्दुस समद अकबर के दरबार में थे। **अबुल फजल के अनुसार अकबर ने उन्हें सीरीन-ए-कलम की उपाधि दी ।**
- अकबर के समय **सबसे बड़ी योजना हम्जानामा का चित्रण 1562 ई. में प्रारंभ हुआ ।** इसे ही **दास्तान-ए-अमीर-हम्जा** कहा जाता है। इसमें अकबर के यौवन काल का सजीव चित्रण है।
- अबुल फजल, बदायूंनी और शाहनवाज खाँ का मानना है कि इसके चित्रण का कार्य अकबर की प्रेरणा से प्रारंभ हुआ और सबसे पहले मीर सैयद अली के मार्ग निर्देशन में यह प्रारंभ हुआ। फिर इसे ख्वाजा अब्दुस समद के निर्देशन में पूरा किया गया।
- अबुल फजल के अनुसार **अकबर के तस्वीरखाना में 17 कलाकार थे,** परंतु वास्तविक संख्या अधिक भी हो सकती है। इनमें हिन्दुओं की संख्या अधिक थी।
- इस काल में चित्रकारी सामूहिक प्रयास था। एक से अधिक कलाकार मिलकर किसी चित्र का निर्माण करते थे। कलाकार नकद वेतन प्राप्त कर्मचारी थे।
- **अकबर के समय चित्रकला के मुख्य रूप से दो विषय थे- 1. दरबार की प्रतिदिन की घटनाओं का चित्रण 2. छवि चित्रण।**
- अकबर के समय में ही मुग़ल चित्रकला पर भारतीय प्रभाव गहरा हो गया। 1562 ई. में जब मुग़ल दरबार में तानसेन के आगमन का प्रसिद्ध चित्र बनाया गया, हिन्दू एवं फारसी पद्धति का सहयोग दिखने लगा।
- फतेहपुर सीकरी के दीवारों पर हिन्दू एवं मुसलमान दोनों कलाकारों के संयुक्त परिश्रम से चित्रकारी की गयी। अकबर के दरबार में अब्दुस समद, फरुख बेग, खुसरो कुली एवं जमशेद विदेशी कलाकार थे।
- अकबर कहा करता था कि मुझे प्रतीत होता है कि मानों चित्रकार को ईश्वर को पहचानने का एकदम विचित्र साधन होता है।

- **आदिवासियों के छापामार संघर्ष से परेशान अंग्रेजी सरकार ने सन् 1778 में इनसे समझौता कर इनके क्षेत्र को दामिनी कोह क्षेत्र घोषित कर दिया।**
- **बस्तर का विद्रोह**
- **सन् 1910 में बस्तर के राजा के विरुद्ध जगदलपुर क्षेत्र में विद्रोह हुआ।** जिसका दमन ब्रिटिश सेना ने किया।
- **इस विद्रोह का मुख्य कारण वन अधिनियमों का क्रियान्वयन और सामन्ती करों का करारोपण था।**

1857 ई. की क्रांति

कारण एवं परिणाम

- 1857 ई. में ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध विद्रोह आधुनिक भारतीय इतिहास की एक अभूतपूर्व तथा युगान्तकारी घटना है। भारत में अंग्रेजी साम्राज्य की स्थापना छल, धोखे और विश्वसघात से हुई थी।
- भारत में जिस तरह ब्रिटिश सत्ता कायम हुई उस तरह इतिहास में और कोई सत्ता कायम नहीं हुई थी।

विद्रोह का स्वरूप

- 1857 के विद्रोह के संबंध में भिन्न भिन्न विचार देते हुए कुछ ने इसे साम्राज्यवादी विस्तार के कारण इसे सैनिक विद्रोह की संज्ञा दी है। तो कुछ ने इसे दो धर्मों अथवा दो नस्लों का युद्ध बताया है।
- सम्राज्यवादी विचार धारा के इतिहासकार सर जॉन लॉरेन्स व सर जॉन सीले ने सैनिक विद्रोह की संज्ञा दी।

विद्रोह के लिए उत्तरदायी कारण

- **गवर्नर जनरल लॉर्ड कैनिंग के शासनकाल की एक महत्त्वपूर्ण घटना 1857 का विद्रोह थी।**
- इसने भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिला दी और कई बार ऐसा प्रतीत होने लगा था कि भारत में अंग्रेजी राज्य का अन्त हो जायेगा यहाँ हम 1857 ई. के विद्रोह के महत्त्वपूर्ण कारणों का विश्लेषण करेंगे।

राजनीतिक कारण

- अंग्रेज भारत में व्यापारी के रूप में आये थे, परन्तु धीरे-धीरे उन्होंने राज्य स्थापना तथा उसके विस्तार का कार्य आरम्भ किया। धीरे-धीरे **भारतीयों की राजनीतिक स्वतंत्रता का अपहरण होता गया और वे अपने राजनीतिक तथा उनसे उत्पन्न अधिकारों से वंचित होते गये।**
- जिसके फलस्वरूप उनमें बड़ा असंतोष फैला, जिसका विस्फोट 1857 ई. के विद्रोह के रूप में हुआ। इस क्रांति के राजनीतिक कारण निम्नलिखित थे-

(1) डलहौजी की साम्राज्यवादी नीतिः-

- 1857 की क्रांति के लिए डलहौजी की साम्राज्यवादी नीति काफी हद तक उत्तरदायी थी। **उसने विजय तथा पुत्र गोद लेने कई निषेध नीतियों द्वारा देशी राज्यों के अपहरण का एक कुचक्र चलाया।** जिसने समपूर्ण भारत के देशी नरेशों को आतंकित कर दिया और उनके हृदय में अस्थिरता तथा आशंका का बीजारोपण कर दिया।
- **लॉर्ड डलहौजी ने व्यपगत सिद्धांत या हड़प-नीति को कठोरता पूर्वक अपनाकर देशी रियासतों के निःसन्तान राजाओं को उत्तराधिकार के लिए दत्तक-पुत्र लेने की आज्ञा नहीं दी** और सतारा (1848), नागपुर (1853), झांसी (1854), बरार (1854), संभलपुर, जैतपुर, बघाट, अदपुर आदि रियासतों को कथनी के ब्रिटिश-साम्राज्य में मिला लिया। उसने 1856 ई. में अंग्रेजों के प्रति वफादार अदद रियासत को कुशासन के आधार पर ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया।
- उसने अवध के नवाब वाजिद अली शाह को गद्दी से उतर दिया। उसने तंजौर और कर्नाटक के नवाबों की राजकीय उपाधियां छीन ली।
- मुग़ल बादशाह को नजराना देने के लिए अपमानित करना। सिक्कों पर नाम गुदवाने जैसी परम्परा को डलहौजी द्वारा समाप्त करना। आदि घटनाओं ने 1857 के विद्रोह को हवा दी।

(2) मुगल सम्राट के साथ दुर्व्यवहार :-

- अंग्रेजों ने भारतीय शासकों के साथ दुर्व्यवहार भी किया। उन्होंने मुग़ल सम्राट को नजराना देना व सम्मान प्रदर्शित करना बन्द कर दिया इतना ही नहीं **लॉर्ड डलहौजी ने मुगल सम्राट की उपाधि को समाप्त करने का निश्चय किया।**
- उसने बहादुरशाह के सबसे बड़े पुत्र मिर्जा जवाबख्त को युवराज स्वीकार करने से इन्कार कर दिया और **बहादुरशाह से अपने पैतृक निवास स्थान लाल किले को खाली कर कुतुब में रहने के लिए कहा।**

(3) ब्रिटिश पदाधिकारियों के वक्तव्य-: डलहौजी की साम्राज्यदी नीति के साथ-साथ कुछ अंग्रेज अधिकारियों ने ऐसे वक्तव्य दिये जिससे देशी नरेश बहुत आतंकित हो गये और अपने भावी अस्तित्व के संबंध मे पूर्ण रूप से निराश हो उठे।

(4) नाना साहब और रानी लक्ष्मी बाई का असंतोष :-

- झांसी की रानी लक्ष्मी बाई तथा पेशवा बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र नाना साहब अंग्रेजों के व्यवहार से बहुत नाराज थे।
- **अंग्रेजों ने झांसी के राजा-गंगाधर राव के दत्तक पुत्र दामोदर राव को उत्तराधिकार से वंचित करके झांसी राज्य को कथनी के राज्य में शामिल कर लिया था।**
- इस अत्याचार को रानी लक्ष्मीबाई सहन न कर सकी और क्रांति के समय उसने विद्रोहियों का साथ दिया।

(5) अवध का विलय और नवाब के साथ अत्याचार :-

- अंग्रेजों ने बलपूर्वक लखनऊ पर अधिकार करके नबाव वाजिद अली शाह को निर्वासित कर दिया था और निर्लज्जतापूर्वक महलों को लूटा था।

- बेगमों के साथ बहुत अपमानजनक व्यवहार किया गया था । इससे अवध के सभी वर्ग के लोगों में बड़ा असंतोष फैला और अवध क्रांतिकारियों का केन्द्र बन गया।

(6) प्राचीन राजनीतिक व्यवस्था का विध्वंस :-

- अंग्रेजों की विजय के फलस्वरूप प्राचीन राजनीतिक व्यवस्था पूर्ण रूप से ध्वस्त हो गई थी ।
- **ब्रिटिश शासन से पहले भारतवासी राज्य की नीति को पूरी तरह प्राभावित करते थे परन्तु अब वे इससे वंचित हो गये ।** अब केवल अंग्रेज ही भारतीयों के भाग्य के निर्माता हो गये ।

(7) अंग्रेजों के प्रति विदेशी भावना :-

- भारतीय जनता अंग्रेजों से इसलिए भी असन्तुष्ट थी क्योंकि वे समझते थे कि उनके शासक उनसे हजारों मील दूर रहते हैं । तुर्क, अफगान और मुग़ल भी भारत में विदेशी थे लेकिन वे भारत में ही बस गये थे और इस देश को उन्होंने अपना देश बना लिया था।
- जबकि अंग्रेजों ने ऐसा कोई काम नहीं किया था। अतः भारतीयों के हृदय और मस्तिष्क से अंग्रेजों के प्रति विदेशी की भावना नहीं निकल सकी थी ।

(8) उच्च वर्ग में असंतोष:- देशी राज्यों के नष्ट हो जाने से न केवल उनके नरेशों का विनाश हुआ जबकि उच्च वर्ग के लोगों की स्थिति पर भी बड़ा घातक प्रहार हुआ ।

प्रशासनिक कारण-

(1) नवीन शासन-पद्धति को समझने में कठिनाई होना :- भारतीय जिस शासन को सदियों से देखते आ रहे थे, वह समाप्त कर दिया गया था । नई शासन-पद्धति को समझने में उन्हें कठिनाई आ रही थी तथा, उसे वे शंका की दृष्टि से देखते थे ।

(2) भारतीयों को प्रशासनिक सेवाओं से अलग रखने की नीति :-

- अंग्रेजों ने शुरू से ही भारतीयों को प्रशासनिक सेवाओं में शामिल न कर भेद-भाव पूर्ण नीति अपनाई । लॉर्ड कार्नवालिस का भारतीयों की कार्य कुशलता और ईमानदारी पर विश्वास नहीं था । अतः उसने **उच्च पदों पर भारतीयों के स्थान पर अंग्रेजों को नियुक्त कर दिया ।**
- परिणामतः भारतीयों के लिए उच्च पदों के द्वार बन्द हो गये । यद्यपि 1833 ई. के कम्पनी के चार्टर एक्ट में यह आवश्वासन दिया गया था कि धर्म, वंश, जन्म, रंग या अन्य किसी आधार पर सार्वजनिक सेवाओं में भर्ती के लिए कोई भेदभाव नहीं बरता जाएगा, परन्तु अंग्रेजों ने इस सिद्धांत का पालन नहीं किया ।
- **सैनिक और असैनिक सभी सार्वजनिक सेवाओं में उच्च पद यूरोपियन व्यक्तियों के लिए ही सुरक्षित रखे गये थे ।** सेना में एक भारतीय का सबसे बड़ा पद सूबेदार का होता था जिसे 60 या 70 रूपये प्रति माह वेतन मिलता था ।
- असैनिक सेवाओं में एक भारतीय को मिल सकने वाला सबसे बड़ा पद सदर अमीन का था जिसे 500/ - रूपये प्रति माह वेतन मिलता था । उच्च पद देना अंग्रेज अपना एकाधिकार समझते थे।

(3) ब्रिटिश न्याय व्यवस्था से भारतीयों में असंतोष :-

- ब्रिटिश न्याय प्रशासन एक भिन्न प्रशासनिक व्यवस्था का प्रतीक था । विधि प्रणाली और सम्पत्ति अधिकार पूरी तरह से नये थे। न्याय प्रणाली में अत्यधिक धन तथा समय नष्ट होता था और फिर भी निर्णय अनिश्चित था ।
- भारतीय इस न्याय व्यवस्था को पसन्द नहीं करते थे । अगर एक छोटा सा किसान भी किसी जमींदार की शिकायत करता था तो जमींदार को न्यायालय में जाना पड़ता था । इस प्रकार सम्मानित व्यक्ति अंग्रेजी न्यायालयों से असंतुष्ट थे ।

(4) दोषपूर्ण भू-राजस्व प्रणाली :-

- **भू-राजस्व प्रणाली को नियमित करने के नाम पर अंग्रेजों ने अनेक जमींदारों के पट्टों की छानबीन की । जिन लोगों के पास जमीन के पट्टे नहीं मिले, उनकी जमीनें छीन ली गईं ।**
- बम्बई के प्रसिद्ध इमाम आयोग ने लगभग बीस हजार जागीरें जप्त कर ली थी । लॉर्ड बैन्टिक ने तो माफी की भूमि भी छीन ली । इस प्रकार कुलीन वर्ग को अपनी सम्पत्ति व आय से हाथ धोना पड़ा ।
- **भूमि अपहरण की नीति के कारण तालुकेदारों में बड़ा असंतोष फैला और क्रांति में इन लोगों ने सक्रिय भाग लिया ।**
- किसानों के कल्याण एवं लाभ के नाम पर स्थाई बन्दोबस्त, रैयतवाड़ी व महलवाड़ी प्रणाली लागू की गई थी और हर बार किसानों से पहले की अपेक्षा अधिक लगान वसूल किया गया, जिसके कारण किसान लगातार निर्धन होकर साधारण मजदूर बनता गया ।
- अंग्रेजों की लगान-नीति के विरुद्ध इतना प्रबल विरोध था कि अनेक स्थानों पर बिना सेना की सहायता से लगान जमा नहीं किया जा सकता था।

(5) शक्तिशाली ब्रिटिश अधिकारी वर्ग का विकास :-

- **भारत में कम्पनी शासन की सर्वोच्चता स्थापित होने के साथ ही प्रशासन में एक शक्तिशाली ब्रिटिश अधिकारी वर्ग का उदय हुआ ।**
- यह वर्ग भारतीयों से मिलना पसन्द नहीं करता था और हर प्रकार से उन्हें अपमानित करता था । अंग्रेजों के इस प्रजाति भेदभाव की नीति से भारतीय क्रूद्ध हो उठे और उनका यह क्रोध 1857 ई. के विद्रोह के रूप में व्यक्त हुआ।

(6) शिक्षित भारतीयों में ब्रिटिश शासन से असंतोष :-

- शिक्षित भारतीयों को यह आशा थी कि शिक्षा के प्रसार के साथ-साथ उन्हें राजनीतिक प्रशासनिक अधिकार प्राप्त हो जायेंगे ।

हो गई कि यदि उनके पुत्र नहीं तो उनके पौत्र तो निश्चय ही ईसाई बन जायेंगे ।

- इसके विपरीत **सरकारी स्कूलों में हिन्दू अपने धर्म की शिक्षा नहीं दे सकते थे क्योंकि राज्य अपने को धर्म-निरपेक्ष बतलाता था ।** राज्य की इस दोहरी नीति से भारतीयों में बड़ा असंतोष फैला ।

ईसाई बनने वालों को सुविधाएं देना :-

- ईसाई धर्म की ओर आकर्षित करने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रलोभन दिए जाते थे | जो हिन्दु अथवा मुसलमान ईसाई धर्म को स्वीकार कर लेते थे उन्हें सरकार अनेक प्रकार से सहायता देती थी और सरकारी नौकरियां देकर अन्य लोगों को भी ईसाई बनाने के लिए प्रोत्साहित करती थी ।
- अपराधियों को अपराध से बरी कर दिया जाता था, यदि वे ईसाई धर्म को स्वीकार कर लेते थे । लॉर्ड कैनिंग ने तो ईसाई धर्म के प्रचार के लिए लाखों रुपये दिए | इससे लोग स्वेच्छा से ईसाई बनने लगे । फलतः लोगों में असंतोष बढ़ता गया|

○ **सम्पत्ति संबंधी उत्तराधिकार के नियम में परिवर्तन :-**

- 1856 ई. में जो पैतृक सम्पत्ति-संबंधी कानून बनाया गया उसके अनुसार यह निश्चित किया गया कि धर्म परिवर्तन करने पर किसी व्यक्ति को उसकी पैतृक सम्पत्ति से वंचित नही किया जायेगा । उसे भी भारतीयों ने ईसाई धर्म को प्रोत्साहित करने का साधन समझा ।

(6) गोद-प्रथा का निषेध :- डलहौजी ने हिन्दुओं को पुत्र गोद लेने पर प्रतिबन्ध लगा दिया था| लेकिन **हिन्दू धर्म शासन के अनुसार परलोक में शांति प्राप्त करने के लिए निःसन्तान व्यक्ति के लिए पुत्र को गोद लेना बहुत जरूरी समझा जाता था । अतएवः डलहौजी की इस नीति से भारतीयों में बड़ा असंतोष फैला ।**

○ **जेलों में ईसाई धर्म का प्रसार :-**

- अंग्रेजों ने स्कूलों के साथ-साथ जेलों को भी ईसाई धर्म प्रसार का साधन बनाया था । जेल में प्रतिदिन सुबह एक ईसाई अध्यापक ईसाई धर्म की शिक्षा देता था| 1845 ई. में एक नये नियम के अन्तर्गत जेल में सभी कैदियों का भोजन एक ब्राह्मण व्यक्ति के द्वारा सामूहिक रूप से बनाया जाना शुरू किया गया ।
- उस समय प्रत्येक कैदी अपना भोजन स्वयं बनाता था । इस नये नियम से प्रत्येक कैदी को अपनी जाति खो देने का डर लगा क्योंकि अन्तर्जातीय खान-पान को हिन्दू स्वीकार नहीं करते थे । जेल से छूटे हुए व्यक्ति को हिन्दू परिवार में शामिल नहीं करते थे|

तात्कालिक कारण

- उपरोक्त विवरण से प्रकट होता है कि भारतीय सैनिक न केवल उन सभी बातों से असन्तुष्ट थे जिनसे भारतीय नागरिक असन्तुष्ट थे बल्कि उनके असंतोष के कुछ अलग कारण भी थे ।
- अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह की भावना सैनिकों में आ चुकी थी उसे केवल एक चिंगारी की जरूरत थी और वह चिंगारी चर्बी लगे हुए कारतूसों ने प्रदान कर दी ।
- **1856 ई. में भारत सरकार ने पुरानी बन्दूकों को हटाकर नई 'एनफील्ड राइफल' को सेना में प्रयोग करना चाहा । उसके लिए जो कारतूस बनाये गये थे उन्हें बन्दूक में भरने से पहले मुंह से खोलना पड़ता था । इन राइफलों के कारतूसों को चिकना बनाने में गाय और सूअर की चर्बी का प्रयोग होता था ।** यद्यपि अंग्रेज अधिकारियों ने इस बात को नहीं माना लेकिन सैनिकों को उन पर विश्वास नहीं हुआ ।
- यह भारतीय सैनिकों की धार्मिक भावनाओं की सूर अवहेलना थी । उन्हें यह विश्वास हो गया कि अंग्रेज हिन्दू और मुसलमान दोनों का ही धर्म भ्रष्ट करना चाहते हैं । अतः उन्होंने धर्म भ्रष्ट होने के बजाय ऐसे दूषित शासन का अन्त कर देना ही उचित समझा ।
- इस प्रकार, **कारतूसों की घटना 1857 ई. के विद्रोह का मुख्य कारण बनी ।** सैनिकों की सफलता ने भारतीय नागरिकों को भी विद्रोह करने के लिए तैयार कर दिया ।

विद्रोह का प्रारम्भ एवं प्रसार

- **सर्वप्रथम क्रांति की शुरुआत कलकत्ता के पास बैरकपुर छावनी में हुई ।** यहाँ के सैनिकों ने नए कारतूसों का प्रयोग करने से इन्कार कर विद्रोह का झण्डा खड़ा कर दिया|
- **29 मार्च, 1857 ई. को एक ब्राह्मण सैनिक मंगल पाण्डे ने चर्बी वाले कारतूसों के प्रयोग की आज्ञा से नाराज होकर अपने अन्य साथियों के साथ मिलकर कुछ अंग्रेज सैनिक अधिकारियों को मार डाला |**
- परिणाम स्वरुप मंगल पाण्डे तथा उसके सहयोगियों को फांसी की सजा दे दी गई । उसके बाद 19 तथा 34 नम्बर की देशी पलटने समाप्त कर दी गई | बैरकपुर की छावनी की घटना के बाद मेरठ में भी विद्रोह शुरू हो गया |
- सैनिकों ने कारागह से बन्दी सैनिकों को मुक्त करा लिया तथा कई अंग्रेजों का वध कर दिया गया | मेरठ से यह क्रांतिकारी दिल्ली की ओर रवाना हुए|

दिल्ली

- 11 मई 1857 ई. को मेरठ के विद्रोही सैनिक दिल्ली पहुँचे उस समय दिल्ली में कोई अंग्रेज पलटन नहीं थी । विद्रोहियों का दिल्ली के भारतीय सैनिकों ने स्वागत किया और वे भीड़ के साथ शामिल हो गये । जैसे ही उन्होंने अपने सभी अंग्रेज अधिकारियों की हत्या कर दी ।
- **विद्रोहियों ने दिल्ली पर अधिकार कर लिया और बहादुर शाह द्वितीय को नेतृत्व स्वीकार करने की**

अपील की । मुग़ल बादशाह ने संकोच किया तथा मेरठ के विद्रोह और विद्रोहियों के दिल्ली पहुँचने की सूचना आगरा में लेफ्टिनेंट गवर्नर को भिजवाई ।

- लेकिन अंत मे विवश होकर उन्होंने क्रांतिकारियों का नेतृत्व करना स्वीकार कर लिया । अंग्रेज दिल्ली से भाग गये और दिल्ली पर मुग़ल सम्राट बहादुर शाह की पताका फहराने लगी |
- मुग़ल शहजादों मिर्जा मुग़ल , मिर्जा खिजिर, सुल्तान और मिर्जा अबूबकर ने संयोग से प्राप्त इस अवसर से पूरा-पूरा लाभ उठाया ।
- उन्हें लगा कि यह उनके वंश के पुराने गौरव को पुनः प्रतिष्ठित करने का मौका है । मेरठ में विद्रोह और दिल्ली पर अधिकार की खबर पूरे देश में फैल गई और कुछ ही दिनों में उत्तर भारत के अधिकांश भागों में क्रांति का प्रसार हो गया।

अवध

- **मेरठ** की घटनाओं की सूचना 14 मई को और दिल्ली पर क्रांतिकारियों के अधिकार की खबर 15 मई को लखनऊ पहुँची । उस समय सर **हेनरी लॉरेंस वहां का चीफ कमिश्नर था ।**
- उसने विद्रोह के संकट से बचने के लिए आवश्यक प्रयास किये लेकिन लखनऊ में भी विद्रोह को लम्बे समय तक टाला नहीं जा सका ।
- 30 मई को लखनऊ से कुछ मील दूर मुरिआव छावनी में देशी सिपाहियों ने यूरोपीय फौज पर सशस्त्र हमला कर दिया । इसमें कुछ लोगों की जान गई ।
- **विद्रोह लखनऊ तक ही सीमित नहीं रहा । जल्द ही यह सीतापुर, फैजाबाद, बनारस, इलाहाबाद, आजमगढ़, मथुरा, मैनपुरी, अलीगढ़, बुलन्दशहर, आगरा, बरेली, फर्रुखाबाद, बिन्नौर, शाहजापुर, मुज्जफरनगर, बदायूँ, दानापुर आदि क्षेत्र में, जहां भारतीय सैनिक तैनात थे, वहाँ फैल गया ।**
- सेना के विद्रोह करने से पुलिस तथा स्थानीय प्रशासन भी तितर-बितर हो गया | जहां भी विद्रोह भड़का सरकारी खजाने को लूट लिया गया और गोले-बारूद पर कब्जा कर लिया गया । बैरकों, थाने के राजस्व कार्यालयों को जला दिया गया, कारागार के दरवाजे खोल दिये गये |
- गाद के किसानों तथा बेदखल किये गये जमींदारों ने साहूकारों एवं नये जमींदारों, जिन्होंने उन्हें बेदखल किया था हमला कर दिया । उन्होंने सरकारी दस्तावेजों तथा साहूकारों के बही खातों को नष्ट कर दिया अथवा लूट लिया ।
- इस प्रकार क्रांतिकारियों ने औपनिवेशिक शासन के सभी चिन्हों को मिटाने का प्रयास किया । जिन क्षेत्रों के लोगों ने विद्रोह में भाग नहीं लिया उनकी सहानुभूति भी विद्रोहियों के साथ थी।

कानपुर

- **5 जून 1857 ई. को कानपुर में विद्रोह हुआ। कानपुर में क्रांति का नेतृत्व नाना साहब ने किया।** उन्होंने 26 जून को कानपुर पर अधिकार स्थापित कर लिया और स्वयं को पेशवा घोषित कर दिया।
- बहादुर शाह को नाना ने भी भारत का बादशाह मान लिया था | **कानपुर के अंग्रेज सेनापति कीलर को नाना साहब ने आत्म-समर्पण करने पर बाध्य कर दिया ।**
- जुलाई 1857 में हैवलाक ने कानपुर पर आक्रमण कर दिया और घोर संघर्ष के बाद कानपुर पर अधिकार कर लिया।
- **नवम्बर 1857 में ग्वालियर के 20,000 क्रांतिकारी सैनिकों ने तात्या टोपे के नेतृत्व में कानपुर पर आक्रमण कर दिया** और वहाँ पर सेनापति विड्हम को पराजित करके 28 नवम्बर को कानपुर पर पुनः प्रभुत्व स्थापित कर लिया |
- दुर्भाग्यश दिसम्बर 1857 को कैम्पवेल ने क्रांतिकारियों को बुरी तरह पराजित किया और कानपुर पुन : अंग्रेजों के हाथ में आ गया | नाना साहब वहां से नेपाल चले गये ।

झांसी

- **झांसी में विद्रोह का प्रारम्भ 5 जून 1857 को हुआ। रानी लक्ष्मीबाई के नेतृत्व में क्रांतिकारियों ने बुन्देलखण्ड तथा उसके निकटवर्ती प्रदेश पर अपना अधिकार कर लिया |**
- **बुन्देलखण्ड में विद्रोह के दमन का कार्य ह्यूरोज नामक सेनापति को सौंपा गया था |** उसने 23 मार्च 1857 को झांसी का घेरा डाल दिया ।
- एक सप्ताह तक युद्ध चलता रहा लक्ष्मीबाई के मोर्चा संभालने वालों में सिर्फ ब्राह्मण एवं क्षत्रिय ही नहीं थे कोली, काछी और तेली भी थे ये महाराष्ट्रीय और बुन्देलखण्डी थे ये पठान तथा अन्य मुसलमान थे ।
- पुरुषों के साथ हर मोर्चे पर महिलाएं भी थी । झांसी की सुरक्षा असंभव समझकर लक्ष्मीबाई 4 अप्रैल 1858 को अपने दत्तक पुत्र दामोदर को पीठ से बांधकर एक रक्षक दल के साथ शत्रु सेना को चीरती हुई कालपी पहुँची ।
- तात्या टोपे, बांदा के नबाव बाणपुर तथा शाहगढ़ के राजा व अन्य क्रांतिकारी नेता भी कालपी विद्यमान थे । यहाँ ह्यूरोज के साथ भयंकर युद्ध हुआ जिसमें विजय अंग्रेजों को मिली ।
- मई 1858 को रानी ग्वालियर पहुँची सिंधिया अंग्रेजों का समर्थक था किन्तु उसकी सेना विद्रोहियों के साथ हो गई । जिसकी सहायता से रानी ने ग्वालियर पर अधिकार कर लिया और ग्वालियर की रक्षा करते हुए वीरगति को प्राप्त हुई ।

बिहार

- **बिहार में जगदीशपुर के जमींदार कुंवरसिंह ने विद्रोह का नेतृत्व किया था ।** उस समय उनकी आयु 70 साल थी |

जेंडर बजटिंग

- जेंडर (लिंग) एक उदासीन शब्द है अर्थात् यह पुरुष , महिला यहाँ तक कि ट्रांसजेंडर्स के लिए भी प्रयुक्त हो सकता है जेंडर बजटिंग से अभिप्राय बजट के प्रावधानों के आकलन के माध्यम से एक लिंग विशेष पर इसके प्रभाव को समझने से है ।
- भारतीय समाज एक पितृसत्तात्मक समाज रहा है जिसमें सत्ता पुरुष सदस्यों के पास होती है । पारंपरिक रूप से संपत्ति एवं उपनाम का हस्तांतरण पिता से पुत्र को होता रहा है । अतः भारत में महिलाओं को न सिर्फ पुरुषों के प्राधिकार में रहना होता है अपितु वे आर्थिक रूप से भी वंचित हो जाते हैं ।
- जेंडर बजटिंग शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख वित्त मंत्रालय ने 2001 में किया ।
- बजट 2001-02 का देश की महिलाओं पर प्रभाव को समझने के लिए सर्वप्रथम जेंडर आधारित मूल्यांकन किया गया था ।
- वर्ष 2002 में जेंडर बजटिंग की जिम्मेदारी नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक फाइनेंस एंड पॉलिसी ' को दी गई ।
- वित्तीय वर्ष 2002-03 में ऐसे ही बजट का मूल्यांकन कई राज्यों द्वारा किया गया था ।
- 2003 में कैबिनेट सचिव के आदेशानुसार प्रत्येक मंत्रालय के अंतर्गत कार्यरत प्रत्येक विभाग को यह निर्देश दिया गया कि अपने वार्षिक रिपोर्ट में महिलाओं के उत्थान के उद्देश्य से किए गए प्रयासों को एक भिन्न खंड के अंतर्गत प्रकाशित करें वर्ष 2004 में वित्त मंत्रालय ने निर्देश दिया कि सभी मंत्रालयों में जनवरी , 2005 तक एक जेंडर बजटिंग सेल होना चाहिए । यह जेंडर बजटिंग सेल उन कल्याणकारी योजनाओं के मूल्यांकन हेतु जिम्मेदार होता है जो 100 % महिला सशक्तिकरण के लिए समर्पित है । साथ ही यह उन कल्याणकारी योजनाओं के मूल्यांकन हेतु भी जिम्मेदार होता है , जिनके कम से कम 30 % प्रावधान महिला उत्थान के लिए हों । अत : जेंडर बजटिंग देश में सामाजिक न्याय की स्थापना का एक उपकरण बन गया है ।
- **रेल बजट एवं आम बजट का विलय**
- वर्ष 1924 से पूर्व रेल बजट एवं आम बजट दोनों साथ प्रस्तुत किए जाते थे ।
- हालांकि इस आम बजट में रेलवे की हिस्सेदारी अर्थव्यवस्था के अन्य आयामों की प्राप्तियों एवं व्यय से कहीं ज्यादा हुआ करती थी । इस दौरान रेलवे का बजट में व्यापक योगदान सरकार की कमियों को उजागर होने से रोकता था ।
- अतः पारदर्शिता बनाए रखने के लिए सर विलियम एकवर्थ की अध्यक्षता में ईस्ट इंडिया रेलवे आयोग का गठन किया गया ।
- 1920 में गठित इस आयोग की संस्तुति के आधार पर 1924 में आम बजट एवं रेल बजट को पृथक् कर दिया गया आजादी के बाद स्थिति की पुन : समीक्षा की गई ।
- आम बजट एवं रेल बजट को अलग - अलग प्रस्तुत करने की यह प्रक्रिया 92 वर्षों तक जारी रही और अंततः बजट 2017-18 में इन दोनों का विलय कर दिया गया ।

बजट 2023-24

- 2023-24 का बजट अनुमान
- कुल प्राप्तियां (उधारी के अलावा)- 27.2 लाख करोड़
- कुल व्यय - 45 लाख करोड़
- नेट टैक्स प्राप्तियां 23.3 लाख करोड़

बजट 2023 की खास बातें

- भारत की प्रति व्यक्ति आय दोगुनी होकर 1.97 रु. हुई।
- अगले एक साल तक गरीबों के लिए मुफ्त अनाज योजना जारी रहेगी।
- पीएम सुरक्षा के तहत् 44.6 करोड़ लोगों को बीमा सुविधा।
- बागवानी योजनाओं पर रहेगा जोर, 2200 करोड़ रुपए का व्यय का प्रावधान।
- कृषि के लिए कर्ज का लक्ष्य बढ़ाकर 20 लाख करोड रुपए किया जाएगा।
- 157 नर्सिंग कॉलेज देश के अलग-अलग हिस्सों में खोले जाएंगे।
- अनुसूचित जाति मिशन पर अगले 3 साल में 15,000 करोड़ खर्च होंगे।
- पीएम आवास योजना फंड में 66 फ़ीसदी की बढ़ोतरी।

बजट 2023 में क्या हुआ सस्ता और महंगा?

- सस्ता - इलेक्ट्रिक वाहन, मोबाइल फोन, एलईडी टीवी, खिलौना, मोबाइल कैमरा लेंस, साइकिल, लिथियम बैटरी, हीरे के आभूषण।
- महंगाः- सोना, आयातित चाँदी, प्लेटिनम, विदेशी किचन चिमनी, सिगरेट।
- **Note:- 2023-24 का बजट अमृत काल में पहला बजट है।**
- बजट: व्यय, कर, लेन- देन और योजनाओं का ब्लूप्रिंट है।
- संविधान के अनुच्छेद- 112 में बजट शब्द का उपयोग न करते हुए इसे "वार्षिक वित्तीय विवरण" के रूप में संदर्भित किया गया है।
- यह बजट आगामी वर्ष 2023- 24 के लिए पेश किया गया है।
- वर्ष 2022- 23 में भारत की विकास दर 7% के आस-पास रही है, जो दूसरे देशों की तुलना में बहुत बेहतर है,

क्योंकि ऐसी महामारी कोविड-19 और वैश्विक मंदी जो रही है।

- वर्ष 2022-23 में राजकोषीय घाटे का लक्ष्य 6.4 प्रतिशत रखा गया था। सरकार इस लक्ष्य को हासिल करने में काफी हद तक सफल रही है।
- वर्ष 2023-24 में राजकोषीय घाटे का लक्ष्य 5.9 प्रतिशत रखा गया है और इसे 2025-26 तक 4.5 प्रतिशत से कम करने का लक्ष्य है ।
- वर्ष 2023-24 का बजट 7 मूल आधारों पर आधारित है, जिसे सप्त ऋषि- 7 कहा गया है।
- समावेशी विकास - (a)कृषि (b)स्वास्थ्य क्षेत्र (c)शिक्षा क्षेत्र
- 2.वित्तीय क्षेत्र
- 3.युवा शक्ति
- 4.आखिरी व्यक्ति तक पहुंच
- अवसंरचना निवेश
- सक्षमता का विकास
- हरित विकास
- कृषि और सहकारिता:- ग्रामीण क्षेत्रों में नवाचार स्टार्ट-अप को प्रोत्साहन देने के लिए कृषि वर्धक निधि
- उच्च मूल्य वाली बागवानी फसलों को प्रोत्साहन देने के लिए आत्मनिर्भर बागवानी स्वच्छ पौध कार्यक्रम
- भारत को श्री अन्न देने के लिए वैश्विक केंद्र बनाने के लिए भारत बाजरा अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद को उत्कृष्टता के रूप में बढ़ावा दिया जाएगा।
- पशुपालन डेयरी एवं मत्स्य क्षेत्र के लिए 20 लाख करोड़ रुपए के ऋण का लक्ष्य।
- भारत को मोटे अनाज का वैश्विक केंद्र बनाने के लिए सहयोग।
- भारत मिलेट (बाजरा) को लोकप्रिय बनाने के कार्य में सबसे आगे है।

स्वास्थ्य व्यय में वृद्धि:- *वित्त वर्ष 2023 में जीडीपी का 2.1 प्रतिशत।*

- वर्ष 2047 तक सिकल सेल एनीमिया का उन्मूलन करने के लिए **उन्मूलन मिशन** की शुरुआत।
- चुने हुए ICMR लैब के माध्यम से सरकारी और निजी संयुक्त चिकित्सीय अनुसंधान को प्रोत्साहन।
- फार्मास्यूटिकल्स अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए नए कार्यक्रम की शुरुआत।

आखिरी व्यक्ति तक पहुंच बनाना : "कोई पीछे न छूटे"

- प्रधानमंत्री PVTG विकास मिशन की शुरुआत।
- कर्नाटक के सूखा संभाव्य क्षेत्र में धारणीय सूक्ष्म सिंचाई के लिए वित्तीय सहायता।
- 740 एकलव्य आदर्श आवासीय स्कूलों के लिए 38,800 से अधिक शिक्षकों की भर्ती।
- PMGKAY के तहत्, सभी अंत्योदय और प्राथमिकता प्राप्त परिवारों को एक वर्ष के लिए मुफ्त खाद्यान्न की आपूर्ति।
- प्राचीन पांडुलिपियों के डिजिटलीकरण के लिए 'भारत श्री' योजना की शुरुआत।
- पीएम- आवास योजना के परिव्यय में 66% की वृद्धि।

अवसंरचना और उत्पादन क्षमता में निवेश :-

- ***विकास व रोजगार के अवसरों में वृद्धि:***
- पूंजी निवेश परिव्यय को 33.4 प्रतिशत बढ़ाकर 10 लाख करोड़ रुपए किया गया।
- इंफ्रास्ट्रक्चर फाइनेंस सेक्रेटेरिएट, अवसंरचना में अधिक निजी निवेश के लिए सभी हित धारकों की सहायता करेगा।
- UIDF की स्थापना द्वारा श्रेणी- 2 और श्रेणी- 3 शहरों में शहरी अवसंरचना का सृजन।
- राज्य सरकारों को 50 वर्षों के लिए ब्याज मुक्त ऋण जारी रखा जाएगा।
- **Note-** अमृत काल के लिए **संकल्पना:** "सशक्त और समावेशी अर्थव्यवस्था"
- इस विजन को हासिल करने के लिए आर्थिक एजेंडा में 3 चीजों पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।
- नागरिकों, विशेषकर युवा वर्ग को, अपनी आकांक्षाओं की पूर्ति करने के लिए पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराना।
- विकास और रोजगार सृजन पर विशेष ध्यान देना।
- वृहद् आर्थिक सुस्थिरता को सुदृढ़ करना।
- ***अमृत काल के दौरान निम्नलिखित 4 मौके रूपांतरकारी हो सकते हैं -***
- महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण:
- पीएम- विश्वकर्मा कौशल सम्मान (पीएम विकास)
- पर्यटन
- हरित विकास

अध्यापकों का प्रशिक्षण:- नवोन्मेषी शिक्षा विज्ञान, पाठ्यचर्या संव्यवहार, सतत् पेशेवर विकास, डिपास्तिक सर्वेक्षण और आईसीटी कार्यान्वियन के माध्यम से अध्यापकों का प्रशिक्षण पुनः परिकल्पित किया जाएगा।

- बच्चों और किशोरों के लिए "**राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय**" की स्थापना की जाएगी।

अंतिम छोर व व्यक्ति तक पहुंचना: -सरकार द्वारा आयुष, मत्स्य पालन, पशुपालन एवं डेयरी कौशल विकास, जल शक्ति तथा सहकारिता मंत्रालयों का गठन किया गया है।

आकांक्षी जिले और ब्लॉक कार्यक्रम: - हाल ही में स्वास्थ्य, पोषण, शिक्षा, कृषि, जल संसाधन, वित्तीय समावेशन, कौशल विकास और आधारभूत अवसंरचना जैसे विभिन्न डोमेनों में अनिवार्य सरकारी सेवाओं की पूर्ण उपलब्धता के लिए 500 ब्लॉकों को कवर करते हुए आकांक्षी ब्लाक कार्यक्रम शुरू किया गया है।

पंजाब नेशनल बैंक	1894
बैंक ऑफ इंडिया	1906
पंजाब एंड सिंध बैंक	1908
बैंक ऑफ बडौदा	1909
सेण्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया	1911
बैंक ऑफ मैसूर	1913
इम्पीरियल बैंक ऑफ इंडिया	1921
भारतीय रिजर्व बैंक	1935
भारतीय स्टेट बैंक	1955

भारतीय रिजर्व बैंक

- भारत का केन्द्रीय बैंक है ।
- वर्ष 1930 में केन्द्रीय बैंकिंग जाँच समिति की सिफारिश के आधार पर भारत के केन्द्रीय बैंक के रूप में रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (R.B.I.) की स्थापना RBI अधिनियम, 1934 के तहत् 1 अप्रैल , 1935 को 5 करोड़ रुपये की अधिकृत पूँजी से हुई थी ।
- 1 जनवरी, 1949 को भारतीय रिजर्व बैंक का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया । इसके प्रथम गवर्नर सर ओसबोर्न स्मिथ (1935-37) थे ।
- देश के स्वतंत्रता के समय में RBI के गर्वनर सर सी डी . देशमुख (1943-49) थे ।
- रिजर्व बैंक के कार्यों का संचालन केन्द्रीय संचालक मण्डल (Central Borad of Directors) द्वारा होता है ।
- सम्पूर्ण देश में इसे चार भागों में बाँटा गया है - उत्तरी क्षेत्र , दक्षिणी क्षेत्र , पूर्वी क्षेत्र तथा पश्चिमी क्षेत्र ।
- इसमें प्रत्येक के लिए 5 सदस्यों का एक स्थानीय बोर्ड (Local board) होता है ।
- केन्द्रीय बोर्ड में 1 गवर्नर तथा अधिक से अधिक 4 डिप्टी गवर्नर होते हैं , जिनकी नियुक्ति केन्द्र सरकार पाँच वर्षों के लिए करती है ।
- वर्तमान में RBI के 25वें गवर्नर शक्तिकांत दास (12 दिसम्बर, 2018 से लगातार)है।
- स्थानीय बोर्डों के कार्यालय नई दिल्ली , चेन्नई , कोलकाता और मुम्बई में है ।
- स्थानीय बोर्ड केन्द्रीय बोर्ड के आदेशानुसार कार्य करते हैं ।
- रिजर्व बैंक का प्रधान अथवा केन्द्रीय कार्यालय मुम्बई में स्थित है ।
- नई दिल्ली , कोलकाता तथा चेन्नई में स्थानीय प्रधान कार्यालय है

RBI के कार्य

- **भारत में नए नोट जारी करने की व्यवस्था**
- एक रुपये के नोट का सभी सिक्कों को छोड़कर रिजर्व बैंक को विभिन्न मूल्य वर्ग के नोटों को जारी करने का एकाधिकारक प्राप्त है ।
- रिजर्व बैंक सरकार के प्रतिनिधि के रूप में एक रुपए के नोटों तथा सिक्कों एवं छोटे सिक्कों का देशे में वितरण का कार्य करता है ।
- करेन्सी नोट जारी करने के लिए वर्तमान में रिजर्व बैंक नोट प्रचालन की न्यूनतम निधि पद्धति (Minimum Reserve System) को अपनाता है । इस पद्धति के अंतर्गत रिजर्व बैंक के पास स्वर्ण एवं विदेशी ऋणपत्र कुल मिलाकर किसी भी समय 200 करोड़ रुपये के मूल्य से कम नहीं होने चाहिए । इनमें स्वर्ण का मूल्य (धातु तथा मुद्रा मिलाकर) 115 करोड़ रुपए से कम नहीं होना चाहिए । यह पद्धति रिजर्व बैंक ने 1957 के बाद अपनाई थी ।

NOTE-नए नोट छापने की एक अन्य व्यवस्था भी हैं परन्तु इसका प्रयोग भारत में नहीं होता यह व्यवस्था अनुपाती आरसी व्यवस्था है (Prahetional Resere system) इसके अन्तर्गत जिस अनुपात में नए नोट का मूल्य बढ़ता हैं उसी अनुपात में रखे गए कोष को बढाना पड़ता है

NOTE – 1000 रुपये के नोटों का परिचालन 8 नवम्बर, 2016 से बंद हो गया है।

- **NOTE**- सिक्के सीमित विधि ग्राह्य (Limited Legal Tender) है । भारत में कागजी नोट असीमित विधि ग्राह्य (Unlimited Le gal Tender) है । इसका अर्थ यह है कि भुगतान का निपटारा करने के लिए सिक्कों का प्रयोग केवल एक सीमा तक ही किया जा सकता है । इसके विपरीत , कागजी नोटों के रूप में भुगतानों का निपटारा करने हेतु उनका प्रयोग असीमित मात्रा में किया जा सकता है ।

सिक्कों का उत्पादन

- सिक्कों का उत्पादन करने तथा सोने और चाँदी की परख करने एवं तमगों का उत्पादन करने के लिए भारत सरकार की पाँच टकसालें मुम्बई , अलीपुर (कोलकाता) , सैफाबाद (हैदराबाद) , चेर्लापल्ली (हैराबाद) तथा नोएडा में स्थित है ।
- टकसालों में सिक्कों के अलावा विभिन्न प्रकार के पदकों (मेडल) का भी उत्पादन किया जाता है ।
- **NOTE**- 25 पैसे तथा इससे कम मूल्य के सभी सिक्कों का परिचालन जुलाई, 2011 से बंद हो गया है । अर्थात देश में अब 50 पैसे का सिक्का सबसे कम मूल्य की विधिग्राह्य मुद्रा है ।

इण्डिया सिक्योरिटी प्रेस , नासिक (महाराष्ट्र) –

- भारत प्रतिभूति में डाक सम्बन्धी लेखन सामग्री , डाक एवं डाक - भिन्न टिकटों , अदालती एवं गैर - अदालती स्टाम्पों , बैंकों (RBI तथा SBI) के चेकों , बॉण्डों , राष्ट्रीय बचत पत्रों आदि के अलावा राज्य सरकारों , सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों , वित्तीय निगमों आदि के प्रतिभूति पत्रों की छपाई की जाती है ।

सिक्योरिटी प्रिन्टिंग प्रेस , हैदराबाद

- सिक्योरिटी प्रिन्टिंग प्रेस हैदराबाद की स्थापना दक्षिण राज्यों की डाक लेखन सामग्री की मांगों को पूरा करने के लिए की गई तथा यहाँ पूरे देश की केन्द्रीय उत्पाद शुल्क स्टाम्प की छपाई भी होती है ।

करेन्सी नोट प्रेस , नासिक (महाराष्ट्र)

- नोट प्रेस 1 , 2 , 5 , 10 , 50 , 100 , 500 तथा 2000 रुपये के बैंक नोट छापती है और उनकी पूर्ति करती है ।

बैंक नोट प्रेस , देवास (मध्य प्रदेश)

- देवास स्थित बैंक नोट प्रेस 20 , 50 , 100 , 500 और 2000 रुपये के उच्च मूल्य वर्ग के नोट छापती है ।
- बैंक नोट प्रेस का स्याही का कारखाना प्रतिभूति पत्रों की स्याही का निर्माण करता है ।
- **साल्वोनी (पं . बंगाल) तथा मैसूर (कर्नाटक) के भारतीय रिजर्व बैंक ने दो नयी एवं अत्याधुनिक करेन्सी नोट प्रेस स्थापित की गयी हैं । यहाँ भारतीय रिजर्व बैंक के नियन्त्रण में करेन्सी नोट छापे जाते हैं ।**

सिक्योरिटी पेपर मिल , होशंगाबाद (मध्य प्रदेश)

- बैंक और करेन्सी नोट कागज तथा गैर - ज्यूडिशियल स्टाम्प पेपर की छपाई में प्रयोग होने वाले कागज का उत्पादन करने के लिए सिक्योरिटी पेपर मिल होशंगाबाद में 1967-68 में चालू की गई थी ।

सरकार के बैंकर का कार्य करना

- सरकारी बैंकर के रूप में यह निम्नलिखित कार्य सम्पन्न करता है-
- भारत सरकार तथा राज्य सरकारों की ओर से धन प्राप्त करना और इनके आदेशानुसार इनका भुगतान करना ।
- भारत सरकार तथा राज्य सरकारों की ओर से जनता से ऋण प्राप्त करना ।
- सरकारी कोषों का स्थानान्तरण करना ।
- भारत सरकार एवं राज्य सरकारों के लिए विदेशी विनिमय का प्रबन्ध करना ।
- भारत सरकार एवं राज्य सरकारों को आर्थिक सलाह देना ।

रिजर्व बैंक बैंकों का बैंक

- बैंकों के बैंक के रूप में यह निम्नलिखित कार्य करता है
- रिजर्व बैंक व्यापरिक बैंकों का अंतिम ऋणदाता है ।
- रिजर्व बैंक बैंकों की साख नीति का नियंत्रण रखता है ।
- वर्ष 1949 के बैंकिंग नियमन अधिनियम के अंतर्गत रिजर्व बैंक को व्यापक अधिकार प्राप्त हैं ; जैसे - अनुसूचित बैंक का निरीक्षण करना, नए बैंकों की स्थापना के लिए अनुज्ञा - पत्र प्रदान करना, आदि ।

- **विदेशी विनिमय कोष का संरक्षण करना**
- केन्द्रीय बैंक देश के विदेशी विनिमय कोष के संरक्षक के रूप में भी कार्य करता है । केन्द्रीय बैंक विदेशी मुद्राओं के कोष संचित रखता है जिससे अंतरराष्ट्रीय व्यापार के विकास तथा विनिमय दर की स्थिरता को बनाए रखा जा सके।
- **कृषि साख की व्यवस्था करना**
- कृषि साख की व्यवस्था करने के लिए रिजर्व बैंक ने एक कृषि साख विभाग की स्थापना की है । इस विभाग का मुख्य कार्य कृषि साख से सम्बन्धित समस्याओं के बारे में अनुसंधान करना है ।

समाशोधन - गृह का कार्य करना

- रिजर्व बैंक देश का केन्द्रीय बैंक है । यह बैंकों को समाशोधन गृह (Clearing House) की सुविधा प्रदान करता है । यह कार्य करके रिजर्व बैंक सदस्य बैंकों में रुपए के स्थानान्तरण को सुविधाजनक बनाता है

साख का नियंत्रण करना

- साख तथा मुद्रा पर नियंत्रण करने के लिए रिजर्व बैंक देश में मुद्रा तथा साख की माँग व पूर्ति के मध्य संतुलन स्थापित करने का प्रयास करता है । देश में मौद्रिक स्थायित्व लाने के लिए यह एक महत्वपूर्ण कार्य है ।

औद्योगिक वित्त की व्यवस्था में सहायता करना

- रिजर्व बैंक ने ' औद्योगिक वित्त निगम ' तथा ' राज्य वित्त निगमों ' के बड़ी मात्रा में अंश खरीद रखे हैं । आवश्यकता पड़ने पर वह दीर्घकालीन व मध्यकालीन ऋण भी प्रदान करता है ।

आर्थिक व्यवस्था से सम्बन्धित समक एकत्रित करना

- रिजर्व बैंक मुद्रा , साख , बैंकिंग , वित्त , कृषि एवं औद्योगिक उत्पादन आदि से सम्बन्धित आँकड़े एकत्रित करता है और उन्हें प्रकाशित करता है । ये आँकड़े देश की विभिन्न आर्थिक समस्याओं को समझने में सहायता देते हैं ।

भारत की वर्तमान करेन्सी व्यवस्था

- भारतीय करेन्सी व्यवस्था की इकाई रुपया है जिसमें कागजी करेन्सी और सिक्के दोनों प्रचलित हैं । सिक्के एवं एक रुपये का नोट (जिस पर वित्त सचिव , भारत सरकार के हस्ताक्षर होते हैं) भारत सरकार निर्गत करती है , जबकि 2 ,5 ,10,20,50, 100, 500 तथा 2,000 रुपये के करेन्सी नोट भारतीय रिजर्व बैंक निर्गत करता है।

साख नियंत्रण (Control of Credit)

- रिजर्व बैंक साख के नियंत्रण एवं नियमन हेतु दो प्रकार के का प्रयोग करता है

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न , 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न , 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6URO

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये
RAS Pre. 2023	01 अक्तूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)

SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO FREE SAMPLE

Our Selected Students

Approx. 137+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
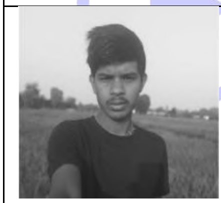	**Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati**	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	MONU S/O KAMTA PRASAD	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
	Govinda Jangir	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
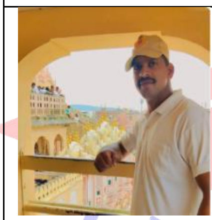	**Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel**	Rac batalian	729141135	Dis.-Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota

And many others……

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp करें – https://wa.link/001xtz

Online order करें – https://shorturl.at/sxD46

Call करें - 9887809083